શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬
2269

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

८३
२०५८

॥ सत्यनाम ॥

बालवल्लभ चेतन ग्रंथमाला पु. ५

सद्गुरु कबीर साहब का

ज्ञान स्वरोदय

[पवन स्वरोदय, तत्त्व स्वरोदय, दुर्लभयोग तथा बड़ा संतोष बोध और गर्भावलि के साथ]

प्रकाशक—

श्री १०८ महंतश्री बालकदासजी साहेब

कबीर धर्मवर्धक कार्यालय,

सीयाबाग–बड़ोदा।

मूल्य ०–८–० (डाकखर्च अलग)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ सत्यनाम ॥

बालवल्लभ चेतन ग्रंथमाला पु. ५

सद्गुरु कबीर साहब का

ज्ञान स्वरोदय

[पवन स्वरोदय, तत्त्व स्वरोदय, हठयोग तथा
बड़ा संतोष बोध और गर्भावलि के साथ]

प्रकाशक—
महंतश्री बालकदासजी गुरुश्री वल्लभदासजी साहेब
कबीर धर्मवर्धक कार्यालय,
ठि. सीयाबाग, कबीर साहेब का मंदिर, बड़ोदा, (स्टेट गुजरात)

मुद्रक—
पं. मोतीदासजी चेतनदासजी
श्री कबीर प्रेस, सीयाबाग-बड़ोदा.

सं. २००६ } सत्कबीर प्राकट्य सं. ५५१ { सन १९४९
द्वितीयावृत्ति } सर्व हक्क प्रकाशक के स्वाधीन हैं। { प्रत २०००

मूल्य ०-८-० (डाकखर्च अलग)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सत्यनाम

वक्तव्य

सद्गुरु की दया से आज हम सुज्ञ प्रेमी ग्राहकों के हस्त में "**कबीर धर्मवर्धक कार्यालय**" का पाँचवाँ ग्रंथ "**ज्ञान स्वरोदय**" दे रहे हैं। ग्रंथ कैसा और कितना उपयोगी है यह हम नहीं कह सकते, क्यों कि; "जाको जैसा गुरु मिला, ताको तैसी सूझ" सद्गुरु के इस वचनानुसार जिसको जैसी समझ बूझ होगी व उसी दृष्टिसे ग्रंथ को देखेंगे, विचारेंगे और लाभ उठावेंगे। और यह ग्रंथ स्वरज्ञान के साथ साथ आत्म-दर्शन तथा आत्मज्ञान के सरल, शुभ और अपूर्व सहज मार्ग का प्रदर्शन करता है। इसलिये प्रत्येक आत्मज्ञानपिपासु का कर्तव्य है कि अवश्य लाभ उठावें।

ग्रंथ को शुद्ध सुंदर और अच्छे चिकने कागज पर छपाने में यथाशक्ति पूरा यत्न किया गया है। कुछ काना मात्रादि की भूल हो तो सुधार लेवें ऐसी नम्र प्रार्थना है।

"पवन स्वरोदय, तत्व स्वरोदय, दुर्लभ योग, बड़ा संतोष बोध तथा गर्भावली" ये ग्रंथ भी उपरोक्त विषय के ही हैं। इनको भी इस ग्रंथ में दे दिये गये हैं। ये ग्रंथ कैसे जीवनोपयोगी और ज्ञानपूर्ण हैं, यह तो केवल पढ़ने विचारने से मालूम हो सकता है।

आनंद की बात तो यह है कि कबीर साहित्य के गूढार्थ के ज्ञाता स्वामी श्री महन्त साहेब **श्री बालकृष्णदासजी साहेबने** विद्वत्तापूर्ण सारगर्भित भावपूर्ण प्रस्तावना लिख दी है। इस लिए कबीर धर्मवर्धक कार्यालय उनका ऋणी है।

कबीर पंथ विभूति श्रीमान् पंडित श्री मोतीदासजी साहेब ने प्रेस संबंधी तमाम कार्य ध्यानपूर्वक किये हैं और ग्रंथ को सुघड, सुंदर और स्वच्छ छपाई

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वगैरह खंतपूर्वक किये हैं। ऐसे ही कार्य करने की शक्ति सद्गुरु उन्हें प्रदान करें।

आशा है, सद्गुरु के ज्ञानपिपासु प्रेमी सज्जन, इन ग्रंथों को अपना कर हमारे उत्साह को बढावेंगे। सारभूत कुछ दोहे देकर हम इस वक्तव्य को पूरा करते हैं :—

सतगुरु सत्य कबीर हैं, सब पीरन के पीर।
शरण गहै, हंस हि बनै, पहुँचै भव जल तीर॥

जो चाहो निज मुक्ति को, गहो स्वरोदय ज्ञान।
श्वासा में साहिब मिले, समझो ज्ञान सुजान॥

सतगुरु का आदेश यह, समझि बूझि गहि लेव।
पावै निज 'चैतन्य' को, श्वासा में निज भेव॥

※ ※ ※ ※

"कहता हूं कहि जात हूं, काह बजावूं ढोल।
श्वासा खाली जात है, तीन लोक का मोल॥

※ ※ ※ ※

मुझे कहां ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।

※ ※ ※ ※

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मैं श्वासों के श्वास मै"॥

सूचना :— 'साखी ग्रंथ' की दूसरी आवृत्ति छप रही है। रजिस्टर में नाम दर्ज करावें ताकि तैयार होतेही मिल जावें।

ज्येष्ठ पूनम
१०-६-४९

प्रकाशक,
महंत श्री बालकदासजी साहेब

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ सत्यनाम ॥

प्रस्तावना

आध्यात्मिक विज्ञान-जगत् में 'स्वरोदय' विज्ञान का भी अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण अनोखा स्थान है।

स्वरोदय-विज्ञान याने प्राण-विज्ञान। और प्राण तो जगत्-जीवों का मुख्य जीवन-स्रोत है ही अर्थात् प्राण पर ही प्राणिमात्र का जीवन-क्रम, उत्पत्ति, स्थिति और लयादि का होना निर्भर है। श्रुति—

'प्राणं देवा अनुप्राणन्ति ॥ मनुष्याः पशवश्च ये ॥
प्राणो हि भूतानामायुः ॥ तस्मात्सर्वायुषमुच्यते ॥'

(तैत्तिरीयोपनिषत्)

अन्तर्जगत्—शरीर में जिसको प्राण कहा जाता है, उसीको बाह्य जगत् में सूर्य कहते हैं, और प्राण जैसे शरीर-जगत् का जीवनकेन्द्र है, वैसेही सूर्य बाह्य जगत् का जीवन-स्रोत है। श्रुति—

'सूर्यश्च आत्मा जगतश्च तस्थुः ॥'

इससे यह निष्पन्न हुआ कि, प्राण और सूर्य एक ही है। पर, स्थानभेद और उपाधिभेद के कारण ही उसके स्वरूप और नाम के भेद हैं। सौर जगत् के समग्र कर्म-व्यापार, ज्ञान-विज्ञान, शीत-आतप, वर्षादि ऋतु, उत्पत्ति, स्थिति, संहारादि जितने भी सजीव-निर्जीव पदार्थों का परिवर्तन और जीवन-व्यापार हैं, वे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सबके सब सूर्यदेव पर ही अवस्थित हैं। वैसे ही अन्तर्जगत् के निखिल कर्म व्यापार प्राण पर ही आश्रित हैं। अर्थात् बाह्य जगत् में एकमात्र सूर्य, और शरीरजगत् में केवल प्राण ही ज्येष्ठ, श्रेष्ठ और केन्द्र याने सभी कुछ है। श्रुति–

'यो ह वै ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद जेष्ठश्च ह वै श्रेष्ठश्च भवति प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च ॥'

(छान्दोग्योपनिषत्)

प्राण ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है, इतना ही नहीं; अपितु प्राण ही सब कुछ है। श्रुति–

'प्राणो वा आशा या भूयान्यथा वा अरा नाभौ समर्पिता एवमस्मिन् प्राणे सर्वꣳ समर्पितं प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणाय ददाति प्राणो ह पिता प्राणो माता प्राणो भ्राता प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः' ॥ १ ॥

....'प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति'।

(छान्दोग्योपनिषत्)

एवं बाह्यान्तर्जगत् के जीवन-स्रोत सूर्य और प्राण ही हैं। यह निर्विवाद सिद्ध है। अतएव प्राण और सूर्य के तानेबाने से ही अखिल विश्व का स्थूल सूक्ष्म कर्म-व्यापार, और ज्ञान-विज्ञान आदि अनुस्यूत, ओत-प्रोत होकर सम्यक् रूप से संचालित हो रहे हैं। ऐसा ज्ञान जिस विद्वान् पुरुष को प्राप्त हो जाता है, वह अमर बन जाता है। श्रुति–

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

' य एवं विद्वान् प्राणं वेद ॥ न हास्य प्रजा हीयतेऽमृतो भवति तदेष श्लोकः ॥ ११ ॥ उत्पत्तिमायतिं स्थानं विभुत्वं चैव पञ्चधा ' ॥

' अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते विज्ञायामृतमश्नुत इति ' ॥ १२ ॥ इति तृतीयः प्रश्नः (प्रश्नोपनिषत्)

अर्थात् प्राण, सूर्य और उसके ज्ञान-विज्ञान का समर्थन दो चार श्रुतिवचन करते हों सो बात नहीं, किन्तु समग्र वैदिक साहित्य ही उसका भिन्न २ स्वरूप या दृष्टि से समर्थन, प्रशंसा अथवा स्तुति फल गुणगान से भरा पड़ा है। विश्वविश्रुत गायत्री-मंत्र-वेदमाता का बिरद जिसे प्राप्त है, वह उसीका अप्रतिम प्रतीक है। अस्तु,

अबतक उपर्युक्त रीत्या प्राण या सूर्य-विज्ञान के संबन्ध में जो विशद विवेचन किया गया है, वह प्रस्तुत संकलन में विवर्णित उसी विषय की बहुमूल्यता और उपादेयता ठीक २ साधक को समझने में सहायभूत हो, इसीलिए है।

' ज्ञान-स्वरोदय ' और एतद्-विषयक जो इतर ग्रंथ-रत्न इस संकलन में प्रस्तुत किये गये हैं, उन सभी ग्रंथों में एक या दूसरे रूप से स्वर-विज्ञान की ही अति महत्त्वपूर्ण विशद चर्चा की गई है।

संत-साहित्य और लोकहित की दृष्टि से प्राण-विज्ञान की चचा बहुमूल्य और अनुपम है। प्राण-विज्ञान को जानकर हरएक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

व्यक्ति सुखी, समृद्ध, सुभागी और शांतिप्रद जीवन का भोक्ता बन सकता है।

सद्गुरु कबीर धर्मदास साहेब के संवादरूप में यह चर्चा निःसंदेह बहु मनोगम्य, सरल, सुबोध रूप से की गई है। सद्गुरु के शब्दों में ही उसकी सर्वोत्तमता को श्रवण करिये—

'सब जोगन को जोग है, सब ज्ञानन को ज्ञान।
सर्व सिद्ध को सिद्ध है, तत्त्व स्वरन को ध्यान॥'

और उसकी अमोघता को सुनिए,

'धरनि टरे गिरिवर टरे, ध्रुव टरे सुन मीत।
ज्ञान स्वरोदय ना टरे, कहैं कबीर जग जीत॥'

इस दिव्य साधना का सफल परिणाम देखिए,

'ज्ञान स्वरोदय सार है, सतगुरु कहि समुझाय।
जो जन ज्ञानी चित धरे, ब्रह्म रूप को पाय॥'

अतएव स्वरोदय—विज्ञान के समान दिव्य, निर्मल, सात्विक और लोकोपकारक दूसरा कोई सरल, सुगम साधना-मार्ग नहीं है। थोडे ही प्रयत्न से अपने लिये और थोडा विशेष परिश्रम करने पर औरों के लिए भी यह अति उपयोगी साधन-साथी हो जाता है।

संत-मार्ग के सर्वश्रेष्ठ पथिक और संत-साहित्य के सर्वोत्तम निर्माता, परमतत्त्व के दिव्य चातक वंदनीय **धनी धर्मदास साहेब** की निर्मल तीव्र तत्त्वजिज्ञासा के कारण ही अनेक अनूठे तात्विक ज्ञातव्य गूढ रहस्यमय विषयों की प्रश्नोत्तर-रत्नमालासे ही संत-साहित्य देदीप्यमान हो रहा है। इस संकलन में जो २ ग्रंथरत्न

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिए गये हैं, वे सब के सब बहुमूल्य और जनोपयोगी हैं। इन सब ग्रंथोंमें लौकिक, पारलौकिक और आध्यात्मिक सुख-समृद्धि के हेतुभूत प्रश्नों की खूब विशद विचारणा की गई है। जो हरएक व्यक्ति के लिए अति उपयोगी और हितसाधक है। ऐसे लोकोपयोगी सुंदर, सुखप्रद ग्रंथरत्नों का संकलन और प्रकाशन कर पू० म० **श्री बालकदासजी साहबने** संत-साहित्य की रक्षा-प्रचार की दृष्टिसे और जिज्ञासु जनों की हित कामनाकी दृष्टि से जो पवित्र सेवा और पूर्ति की है, उसके लिए सचमुच ही वे सर्वथा प्रशंसा और आभार–अभिनंदन के अधिकारी हैं। और बाह्यान्तर सुंदरता, छपाई, सफाई, आकार-प्रकारको सुखद मनोरम्यता और नेत्रप्रियता प्रदानकर्ता पं० श्रीमोतीदासजी साहेब भी हमारे अभिनंदन और प्रशंसा के पात्र हैं।

दयासागर, सद्गुरु कबीर धर्मदास साहेब, उन्हें ऐसे निर्मल सुखप्रद कार्योंका विशेष वितान करने की सर्वतोमुखी क्षमता प्रदान करें, यही नम्र मंगल कामना और प्रार्थना है।

जो लोग अपनी किसी भी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति के लिये यत्रतत्र भटकते हैं और दुःख उठाते हैं। और अन्त में गहरी निराशा के गड्ढे में गिर कर विनाशको प्राप्त होते है; उन सबसे नम्र प्रार्थना है कि, इस सर्वोत्तम प्रकाशन का अमोघ लाभ उठाकर लाभान्वित होनेका सदा प्रयत्न करें। इति शम्!

ज्ञानाश्रम-**विश्वामित्री,**
ता. ६-६-४९.

महंत स्वामी श्री बालकृष्णदासजी साहेब.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सत्यनाम ।

सद्गुरु कबीर साहिब का

ज्ञान स्वरोदय ।

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोकः ।

सत्यं बोधमयं नृरूपममलं, प्रत्यक्ष—सर्वेश्वरम् ।
रत्नैर्मण्डितशीर्षशुभ्रमुकुटं, श्वेताम्बरैः शोभितम् ॥
मुक्तामालविभूषितं च हृदयं, सिंहासने संस्थितम् ।
भक्तानां वरदं प्रसन्नवदनं, श्रीसद्गुरुं नौम्यहम् ॥

धर्मदास वचन ।

सत्तनाम गुरुदेव जू, वंदन करूँ अनन्त ।
तुव प्रसाद सुर भेद को, धर्मदास पूछन्त ॥१॥
पुरुषोत्तम परमातमा, पूरन विस्वाबीस ।
आदि पुरुष अविचल तुही, तोहि नमावूँ सीस ॥२॥

सत्कबीर बचन ।

क्षर ॐकार सु कहत हैं, अक्षर सोहं जान ।
निहअक्षर स्वासा रहित, ताही को मन आन ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ताही को मन आन, रात दिन सुरत लगावौ।
आपू आप हि बीच, और न सीस नमावौ॥
सो हि कबीर कथि कहत हैं, अगम निगम की साख।
येहि बचन ब्रह्मज्ञानका, धर्मदास चित राख॥१॥
ओहं सों काया भई, सोहं सों मन होय।
निहअक्षर स्वासा भई, धर्मदास भल जोय॥
धर्मदास भल जोय, खैंचि मन तहँवाँ राख्यौ।
क्षर अक्षर है एक, मनकी दुविधा नाख्यौ॥
जब दर्सै एक हि एक, भेप है सबहि तुम्हारो।
डार पात फल फूल, मूल सो सब हि निहारो॥२॥
श्वासा सों सोहंग भयो, सोहं सों ॐकार।
ओहं सों रर्रा भयो, धर्मनि करहु बिचार॥
धर्मनि करहु विचार, उलटि घर अपने आवो।
घट घट ब्रह्म अनूप, समिटि कर तहाँ समावो॥
जब मन मनी मिले मन केर, दमकी खबर करे बेर बेर।
कहैं कबीर धर्मदास सों, उलटे मेर सुमेर॥३॥
चार वेद को भेद है, गीता को है जीव।
धर्मदास लख आपमें, तोमें तेरो पीव॥४॥
सब जोगन को जोग है, सब ज्ञानन को ज्ञान।
सर्व सिद्धको सिद्ध है, तत्त्व स्वरन को ध्यान॥५॥
ब्रह्म ज्ञान को जाप है, अजपा सोहं साध।
परमहंस कोइ जानि है, ताको मता अगाध॥६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भेद स्वरोदय सो लहै, समुझै साँस उसाँस ।
भली बुरी तामें लखै, पवन सुरत परकास ॥७॥

धर्मदास वचन ।

सतगुरु हम पर दया करि, दियो स्वरोदय ज्ञान ।
जबसे येही जानि परि, लाभ होय की हानि ॥८॥

सत्कबीर वचन ।

कहैं कबीर सुन धर्मनि, चितवत हो जग ईस ।
येहि वचन ब्रह्मज्ञान को, मानो बिस्वाबीस ॥९॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास विनवै करजोरी, साहिब सुनिये विनती मोरी ।
दम उनमान कहो समुझाई, कहाँसे उपजै कहाँ समाई ॥

सत्कबीर वचन ।

निस वासरका यहि विस्तारा, छसौ आगे इकबीस हजारा ॥
जो यह भेद रहे लौलाई, सतगुरु मिले तो देहि बताई ॥
पांच तत्त्व आवै अरु जाई, घटका भेद कहो समुझाई ॥
तत्त्व तत्त्व का भेद है न्यारा, चंद सुरज ताके संग धारा ॥
सात सुनी सातों विस्तारा, सातों भेद है न्यारा न्यारा ॥
पांच तत्त्व का भेद गहीजै, देह उनमान साधना कीजै ॥
साधे लहर समुद्र सनेहा, सब सुख पावै या जग देहा ॥
महिनत करै रहे लौलीना, तत्त्व सनेही होय न छीना ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पांच तत्त्वका ध्यान जु करही, प्राण आत्मा धोखे न परही ॥
पांच तत्त्व सब अंग समाना, गुन अवगुन सब कहै बखाना ॥

साखी–पांचों तत्त्व विचारिये, आदि अन्त टकसार।
कहैं कबिर सों बांचही, भौजलमें कडिहार ॥१०॥

सत्कबीर वचन।

इँगला पिंगला सुषमना, नाडी तीन विचार।
दहिने बाँये सुर चले, लखै धारना धार ॥ १ ॥
पिंगला दहिने अंग है, इँगला बाँये होय।
सुषमन इनके बीच है, जब सुर चाले दोय ॥ २ ॥
जब सुर चाले पिंगला, ता मधि सूरज वास।
इँगला बाँये अंग है, चन्द्र करै परकास ॥ ३ ॥
उदय अस्त इनको लखै, निरगुन सुर गम बीध।
औ पावै तत बरन को, जब वे होवे सीध ॥ ४ ॥
कहैं कबीर धर्मदास सों, थीर सूर पहिचान।
थिर कारज को चन्द्रमा, चर कारज को भान ॥ ५ ॥
कृष्ण पक्ष जबही लगे, जाय मिलै तहाँ भान।
शुक्ल पक्ष है चन्द्र को, यह निश्चय करि जान ॥ ६ ॥
मंगलवार आदित्य दिन, और शनीचर लीन।
शुभ कारज को मिलत हैं, सूरज के दिन तीन ॥ ७ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सोमवार शुक्र हि भलो, बुध बृहस्पति देख।
चन्द्र योग में सुफल हैं, कहैं कबीर विवेक ॥ ८ ॥
तिथि अरु वार विचार करि, दहिने बाँये अंग।
रन जीतै साजन मिले, थिर कारज परसंग ॥ ९ ॥
कृष्ण पक्ष के आदि हि, तीन दिना लौं भान।
फिर चंदा फिर भान है, फिर चंदा फिर भान ॥ १० ॥
शुक्ल पक्ष के आदि हि, तीन दिना लौं चंद।
फिर सूरज फिर चंद है, फिर सूरज फिर चंद ॥११॥
सूरज की तिथि में चले, जो सूरज परकास।
सुख देही को करत है, लेही लाभ हुलास ॥१२॥
शुक्ल पक्ष चंदा चले, परिवा लेहु विचार।
फल आनंद मंगल करै, देही को सुख सार ॥१३॥
कृष्ण पक्ष तिथि में चलै, जो परिवा को चंद।
होय क्लेश पीड़ा कछू, हानि ताप के द्वंद ॥१४॥
शुक्ल पक्ष तिथि में चलै, जो परिवा को भान।
होय क्लेश पीडा कछू, की दुख कि कछु हान ॥१५॥

प्रश्न विचार।

ऊपर बाँयें सामने, सुर बाँयें के संग।
जो पूछै ससि योग में, तो नीको परसंग ॥१६॥
नीचे पीछै दाहिने, स्वर सूरज को राज।
जो कोइ पूछै आयके, तो समुझो शुभ काज ॥१७॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ऊंचे सनमुख बामही, चंद्र करै परकास।
जो कोइ पूछै आय करि, तो पावै सुख वास ॥१८॥
दहिने स्वर के चलत ही, पूछै बाँयें अंग।
शुक्ल पक्ष नहिं वार है, तो निष्फल परसंग ॥१९॥
पूछै बाँयें आय के, बैठे दहिनी ओर।
चंद चले सूरज नहीं, तिन कारज बिधकोर ॥२०॥
जो कोइ पूछै आय के, बैठे दहिने हात।
लगन वार अरु तिथि मिले, शुभ कारज ह्वै जात ॥२१॥
जो चंदा में स्वर चलै, बाँये पूछै काज।
तिथि अक्षर अरु वार मिले, सफल काज ह्वै साज ॥२२॥
जो सूरज में स्वर चलै, कहै दाहिने आय।
लगन वार अरु तिथि मिले, तो कारज ह्वै जाय ॥२३॥
सात पांच नौ तीन गये, पंद्रह और पचीस।
कार्य वचन अक्षर गिनै, भानु जोग को ईस ॥२४॥
चार आठ द्वादश गिनै, चौदा सोलह मीत।
चंद जोग को मिलत है, कहैं कबीर जगजीत ॥२५॥

लग्न परीक्षा।

करक मेष तूला मकर, चारों चढती राशि।
सूरज को चारों मिले, चर कारज परकाश ॥२६॥
मीन मिथुन कन्या कही, और हु चौथी धंन।
नष्ट काज को सुषमना, मुरली सुर रुनझुंन ॥२७॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वृश्चिक सिंह वृष कुंभ पुनि, बाँयें स्वर के संग ।
चंद्र योग को मिलत हैं, थिर कारज परसंग ॥२८॥

तत्त्व परीक्षा ।

चित अपनो अस्थिर करै, नसिका आगे नैन ।
श्वासा देखै दृष्टि सौं, तब पावे सुख चैन ॥२९॥
पांच घडी पांचों चले, अपनी अपनी वार ॥
पांच तत्व चलते मिले, स्वर बिच लेहु निहार ॥३०॥
धरती अरु आकाश है, और तीसरो पौन ।
पानी पावक पांच ये, करे श्वास में गौन ॥३१॥
पृथ्वी तत्त सोही चले, अरु पीरो रंग देख ।
द्वादश आंगुल श्वास में, सुरति निरति करि देख ॥३२॥
ऊपर को पावक चलै, लाल रंग है भेष ।
चार हि आंगुल श्वास में, कहैं कबीर विशेष ॥३३॥
नीचे को पानी चलै, श्वेत रंग है तास ।
सोलह आंगुल श्वास में, होय भूप अभ्यास ॥३४॥
हरो रंग है वायु को, तिरछा चालै सोय ।
आठ हि आंगुल श्वास में, अनजित निरमल जोय ॥३५॥
स्वर दोनों पूरन चले, बाहिर नहि परकास ।
श्याम रंग है तासको, सोई तत्त्व अकास ॥३६॥
जल पृथ्वी के योग में, जो कोइ पूछे बात ।
ससि घर में जो स्वर चलै, कहु कारज व्है जात ॥३७॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पावक अरु आकाश पुनि, बायक लीजै सोय।
जो कोइ पूछै आयके, शुभ कारज नहि होय ॥३८॥
जल पृथ्वी थिर काज को, चर कारज को नाँहि।
अग्नि वायु चर कार्य को, दहिने स्वर के माँहि ॥३९॥
रोगी को पूछै कोर, बैठे चंद की ओर।
धरती वायु स्वर चलै, मरै नहीं विधि कोर ॥४०॥
रोगी को परसंग जो, बाँये पूछै आय।
चंद बंध सूरज चलै, रोगी जीवै नाँय ॥४१॥
बहते स्वर सूं आयके, शून्य ओर जो जाय।
जो पूछै परसंग वह, रोगी नहि ठहराय ॥४२॥
शून्य ओर से आय के, पूछै बहते श्वास।
तो निश्चय करि जानिये, रोगी को नहि नास ॥४३॥
शून्य ओर सों आय के, पूछै बहते पंख।
जेते कारज जगत के, सो सब सफल असंख ॥४४॥
बहते स्वर सों आय के, जो पूछै शुन ओर।
जेते कारज जगत के, उलट होय विधि कोर ॥४५॥
बाँये स्वर कै दाहिने, जो कोइ पूरन होय।
पूछै पूरन ओर ही, कारज पूरन सोय ॥४६॥

संक्रान्ति लग्न।

वरष एक को फल कहूं, तत मित जानै सोय।
काल समय सोई लखै, बुरो भलो जग होय ॥४७॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संक्रान्ती पुनि मेष विचारो, ता दिन लग्न सु घरी निहारो ॥
तब ही स्वर में करहु विचारा, चले कौन सो तत्त निहारा ॥
जो बाँयें स्वर पृथ्वी होई, नीको तत्त्व कहावै सोई ॥
देश वृद्धि औ समय बतावै, प्रजा सुखी औ मेह बरषावै ॥
चारो बहुत ढोर को निपजै, नरदेही को सुख बहु उपजै ॥
जल चालै बांयें स्वर मांहीं, धरति फलै औ मेह बरषाहीं ॥
आनंद मंगल सों जग रहै, जु आब तत्त्व चंदा में बहै ॥
जल धरती दोनों शुभ भाई, सत्य कबीर रनजीत बताई ॥
जल धरती को भेद है, धर्मनि करहु विचार ।
अग्नि वायु अरु नाभ को, अबही करहु पसार ॥४८॥
तीन तत्त्व का करहु विचारा, स्वर में जाका भेद निहारा ॥
लगे मेष संक्रान्ती जबही, लगती घरी विचारे तबही ॥
अग्नि तत्त्व जो स्वर में चालै, रोग दोषमें परजा हालै ॥
पडै काल थोडा सा वरषै, देश भंग जो पावक दरसै ॥
वायु तत्त्व चालै स्वर संगा, जग में मान होय कछु दंगा ॥
अर्ध काल थोडा सा बरषै, वायु तत्त्व जो स्वर में दरसै ॥
तत्त्व अकास चलै स्वर दोई, मेह न वरषै अन्न न होई ॥
पडै काल तृण उपजै नाह, तत्त्व आकाश होय स्वर मांहीं ॥
चैत रु महिना माघ में, जबही परिवा होय ।
शुक्लपक्ष ता दिन लगै, प्रात श्वास में जोय ॥४९॥
भोरहि परिवा को लखै, पृथ्वी होय अस्थान ।
होय समय परजा सुखी, राजा सुखी निदान ॥५०॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नीर चलै जो चंद में, होय समयकी जीत।
मेह वरषै परजा सुखी, संवत नीको मीत ॥५१॥
पृथ्वी पानी समान है, होवे चंद अस्थान।
दहिने स्वरमें जो चलै, समयो समदम जान ॥५२॥
भोरही सुषमना चलै, राज होय उतपात।
देखन हारा विनसही, और काल परजात ॥५३॥
राज होय उतपात पुनि, पडे काल विश्वास।
मेह नहीं परजा दुखी, होवै तत्त्व अकास ॥५४॥
श्वासा में पावक चलै, पडै काल जब जान।
होय रोग परजा दुखी, घटै राज को मान ॥५५॥
भय क्लेश व्है देश में, विग्रह फल जोवंत।
पडै काल परजा दुखी, होय वायु को तंत ॥५६॥
संक्रान्ती और चैत को, दीन्हो भेद बताय।
जगत काज अबकहत हूं, चंद सुरजको न्याय ॥५७॥

चंद्रयोग के कार्य।

योगाभ्यास कीजिये मीता, औषधि वाडी कीजै प्रीता ॥
दीक्षा मंत्र बनिज बियाजा, चंद्रयोग थिर बैठे राजा ॥
चंद्रयोग में अस्थिर जानो, थिर कारज सबही पहिचानो ॥
करै हवेली छपर छवावै, बाग बगीचा गुफा बनावै ॥
हाकिम जाय कोट पर चढै, चंद्रयोग आसन पग धरै ॥
सत्य कबीर यह खोज बतावै, चंद्रयोग थिर काज कहावै ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ब्याह दान तीरथ जो करै, भूषन पहिरे घर पग धरै ॥
बांयें स्वरमें यह सब कीजै, पोथी पुस्तक जो लिखि लीजै ॥
साखी-बांये स्वर के काज यह, सो मैं दिये बताय।
दहिने स्वरके कहत हूं, ज्ञान स्वरोदय मांय ॥५८॥

सूर्ययोग के कार्य।

जो खांडा कर लिया चाहै, जाके वैरी ऊपर चाहै ॥
युद्ध बाद रन जीतै सोई, दहिने स्वर में चाले कोई ॥
भोजन करे करे अस्नाना, मैथुन कर्म भानु परधाना ॥
यह लेखै कीजै व्यवहारा, गज घोडा वाहन हथियारा ॥
विद्या पढै नहि योग अराधे, मंत्र सिद्धि नहि ध्यान अराधे ॥
वैरी भवन गवन जो कीजै, और काहु को ऋण जो दीजै ॥
ऋण काहू पै जो तूं मांगै, विष अरु भूत उतारन लागै ॥
सत्य कबीर जगजीत विचारी, यह चर कर्म भानु की लारी ॥

गमन परीक्षा।

चर कारज को भान है, थिर कारज को चंद।
सुषमन चलत न चालिये, होय तह कछु दंद ॥५९॥
गांव परगना खेत पुनि, इधर उधर जो मीत।
सुषमन चलत न चालिये, कहैं कबीर जग जीत ॥६०॥
छिन बांयें छिन दाहिने, सोई सुषमन जान।
ढील लगे वैरी मिले, होय काज की हान ॥६१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होय कलेश पीडा कछु, जो कहे कोई जाय।
सुषमन चलत न चालिये, कहैं कबीर समुझाय ॥६२॥
योग करो सुषमन चलै, की आतम को ध्यान।
और काज जो कोइ करै, तो आवै कछु हान ॥६३॥
उत्तर पूरब मत चले, बांयें स्वर परकास।
हानि होय बहुरै नहीं, नहि आवन की आस ॥६४॥
दहिने चलत न चालिये, दक्षिण पश्चिम जान।
जो जावै बहुरै नहीं, होय तहँ कछु हान ॥६५॥
दहिने स्वर में चालिये, उत्तर पूरब राज।
सुख संपति आनंद करै, सबै होय शुभ काज ॥६६॥
बांयें स्वर के चलत ही, दक्षिण पश्चिम देश।
फल आनंद मंगल करै, जो जावै परदेश ॥६७॥
दहिने सूरज बहि चले, दहिनो पग जु होय।
बांयें स्वर में चालिये, वामा पग धर जोय ॥६८॥
वामा पग पहिले धरे, होय चंद के चार।
बांयें सुर में तीन डग, दहिना पहिले धार ॥६९॥
दहिने स्वर में चलत ही, दहिने डग भर तीन।
बांये स्वर में चार डग, बांयें कर परवीन ॥७०॥
दहिने सेती आय कर, बांयें पूछै कोय।
जो बांया स्वर बंध है, सुफल काज नहि होय ॥७१॥
बांयें स्वर ते आय के, दहिने पूछ कोय।
भानु बंध चंदा चलै, तबही काज नसाय ॥७२॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो दहिना स्वर बंध है, कारज पूछै कोय ।
तेज वचन वासों कहो, मनसा पूरन होय ॥७३॥
जब स्वर भीतर को चलै, कारज पूछै कोय ।
तासों यह वायक कहो, मनसा पूरन होय ॥७४॥
जो दहिनो स्वर बंध है, कारज पूछै कोय ।
जो बंध बांयो सूर है, मनसा पूरन होय ॥७५॥
जब स्वर बाहिर को चलै, तब कोइ पूछै तोय ।
वाको ऐसा भाषिये, नहि कारज विधि होय ॥७६॥
चंद चलावै दिवसकूं, रात चलावै सूर ।
नित ही साधन जो करै, उमर होय भरपूर ॥७७॥
पांच घडी पांचों चलै, सोई दहिनो होय ।
दश श्वासा सुषमन चले, ताहि विचारो लोय ॥७८॥
बांयें करवट सोइये, बांयें स्वर जल पीव ।
दहिने स्वर भोजन करै, तब सुख पावै जीव ॥७९॥
बायें स्वर भोजन करै, दहिने पीवै नीर ।
दिन दश रोगी सो करै, आवै रोग शरीर ॥८०॥
दहिने स्वर झाडे फिरै, बांयँ लँगूसे काय ।
जुगती काया साधिये, दीन्हा भेद बताय ॥८१॥
आठ पहर दहिनो चलै, बदले नाहीं पौन ।
तीन वरस काया रहै, जीव करे फिर गौन ॥८२॥
सोलह पहर जबही चले, श्वासा पिंगला मांहि ।
युगल वर्ष काया रहै, पीछै रहनन नांहि ॥८३॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीन रात और तीन दिन, चालै दहिनो श्वास।
सात वर्ष काया रहै, पीछै ह्वै है नास ॥८४॥
पांच रात औ पांच दिना, चालै दहिनो श्वास।
संवत्सर काया रहै, पीछै व्है है नास ॥८५॥
पंद्रह दिन निसदिन चलै, श्वास भानुकी ओर।
आयु जान षट्मास की, जीव जाय तन छोर ॥८६॥
सोलह दिन निशदिन चलै, श्वास भानुकी ओर।
आयु जान एक मास की, जीव जाय तन छोर ॥८७॥
बीस दिना अरु रैन को, रवि चालै इक सार।
तीन मास काया रहै, फिर लै हैं जम मार ॥८८॥
एक मास जो रैनदिन, भान दाहिने होय।
सत्य कबीर यों कहत हैं, नर जीवै दिन दोय ॥८९॥
नाडी जो सुषमन चलै, पांच घडी ठहराय।
पांच घडी सुषमन चले, तब ही नर मरि जाय ॥९०॥
नहि चंदा नहि सूर है, नाहीं सुषमन भाल।
मुख सेती श्वासा चलै, घडी चार में काल ॥९१॥
चार दिना कि आठ दिना, बारह के दिन बीस।
ऐसे जो चंदा चलै, आयु जान बढ़ ईस ॥९२॥
दिन को चंदा जो चलै, चलै रात को सूर।
तो निश्चय करि जानिये, प्राण गवन बडि दूर ॥९३॥
रात चलै स्वर चंद्रमा, दिनको सूरज भाल।
एक मास जो यौं चलै, छठये मासै काल ॥९४॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तीन रात औ तीन दिना, चलै तत्व आकाश ।
एक वरस काया रहै, फेर काल के पास ॥९५॥
नौ भ्रूकुटि सात श्रवण, पांच तारको जान ।
तीन नाक अरु जीभ इक, काल भेद पहिचान ॥९६॥
भेद गुरुसों पाइये, गुरु बिन लहै न ज्ञान ।
सत्य कबीर यों कहत है, धर्मनि सुनो सुजान ॥९७॥
जब साधू ऐसे लखै, छठे मास है काल ।
आगे ते साधन करै, बैठि गुफा ततकाल ॥९८॥
ऊपर खैंचै ध्यान को, प्रान अपान मिलाय ।
उत्तम करै समाधि को, ताको काल न खाय ॥९९॥
पवन पिये ज्वाला पचै, नाभि तले करै राह ।
मेरुदंड को फेरि के, वसै अमरपुर जाह ॥१००॥
जहां काल पहुंचै नहीं, जम की होय न त्रास ।
गगन मंडल में जायके, करो उनमुनी वास ॥१०१॥
नहीं काल नहीं जाल है, छूटे सकल संताप ।
होय उनमुनी लीन मन, तहां विराजै आप ॥१०२॥
तीनों बंध लगाय के, पांचों वायु साध ।
सुषमन मारग व्है चलै, देखै खेल अगाध ॥१०३॥
सुरति जाय शब्दहि मिलै, जहां होय मन लीन ।
खेचरि बंध लगाय करि, पुरुष आप परवीन ॥१०४॥
आसन पद्म लगाय करि, मूल कमल को बांध ।
मेरुदंड को फेरि करि, सुरति गगन को सांध ॥१०५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चंद्र सुरज दोउ सम करै, दृढ कर ध्यान लगाय।
षट चक्रन को वेधि करि, शून्य शिखर को जाय ॥१०६॥
इंगला पिंगला साधिके, सुषमन में करै वास।
परम ज्योति तहां झिलमिलै, पूजै मन विश्वास ॥१०७॥
जिन साधन आगे किया, तासों सब कुछ होय।
जब चाहैं जावै तहां, काल बचावै सोय ॥१०८॥
तरुन अवस्था योग करै, बैठ रहै मन जीत।
काल बचावै साधको, अन्त समय जम जीत ॥१०९॥
सदा आपमें लीन रहि, करि करि योगाभ्यास।
आवत देखै काल जब, गगन मंडल करै बास ॥११०॥
समय समय साधन करै, राखे प्राण चढाय।
पूरा योगी जानिये, ताको काल न खाय ॥१११॥
पहिले साधन ना कियो, गगन मंडल कूं जान।
आवत देखै काल जब, कहा करै अज्ञान ॥११२॥
योग ध्यान कीया नहि, तरुन अवस्था मीत।
आवत देखै काल जब, कैसे के वे जीत ॥११३॥
काल जीत हंसा मिलै, शून्य मंडल अस्थान।
आगे जिन साधन किया, तरुन अवस्था जान ॥११४॥
कालअवधि बीतै जबै, भीत हि भीत समाय।
योगी प्राण उतारही, लेहि समाधि लगाय ॥११५॥
काल जीति जगमें रहै, मृत्युक व्यापै नाँहि।
दसों द्वार को फेरिके, जब चाहै तब जांहि ॥११६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूरज मंडल चीर के, योगी त्यागे प्राण ।
सत्य शब्द सोई लहै, पावै पद निरवान ॥११७॥
कृष्ण पक्ष के मध्य ही, दक्षिणायन में भान ।
योगी काया छोडि है, राजा होय निदान ॥११८॥
राज पाय सतनाम भजै, पूरवली पहिचान ।
योग युक्ति पावै बहु, दूसर मुक्त निधान ॥११९॥
उत्तरायण सूरज लखै, शुक्ल पक्ष के माँहि ।
योगी काया त्याग ही, यामें संशय नांहि ॥१२०॥
मुक्त होय बहुरै नहीं, जनम खोज मिटि जाय ।
बूंद समुद्र हि मिलि गई, दूजा नहि ठहराय ॥१२१॥
दक्षिणायन सूरज रहैं, रहै मास षट जान ।
फिर उतरायन आय के, रहै मास षट मान ॥१२२॥
दोनों स्वरको साधिके, श्वासामें मन राख ।
भेद स्वरोदय पाय के, तब काहूं सों भाख ॥१२३॥

संग्राम परीक्षा ।

जो रन ऊपर जाईए, दहिने स्वर परकास ।
जीत होय हारै नहीं, करै शत्रु को नास ॥१२४॥
दुर्जन को स्वर दाहिनो, अपनो दहिनो होय ।
जो कोई पहिले चढि सकै, खेत जीत है सोय ॥१२५॥
सुषमन चलत न चालिये, युद्ध करन को मीत ।
सीस कटाय के भाजि हो, दुर्जन की होय जीत ॥१२६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जल पृथ्वी में स्वर चलै. सुनो कान दे वीर।
सुफल काज दोनों करैं, की पृथ्वी की नीर ॥१२७॥
जो बाँयें पृथ्वी चलै, चढि आवै कोइ भूप।
आप पैठि दल पेलिये, बात कहत हूं गूप ॥१२८॥
पावक अरु आकाश तत, वायु तत्त्व जो होय।
कछू काम ना कीजिये, यह वर्जित हौं तोय ॥१२९॥
दहिने स्वर के चलत ही, कहूँ जाय जो कोय।
तीन पांव आगे धरै, सूरज को दिन होय ॥१३०॥
बांयें स्वरके चलत ही, वाम पाँव धर चार।
बारा पग आगै धरै, होय चंद को वार ॥१३१॥
दहिने स्वरके चलत ही, दहिन पाँव धर तीन।
बांयें स्वर के चार हैं, बाँये केर प्रवीन ॥१३२॥

गर्भ परीक्षा।

गभवती के गर्भ की, जो कोइ पूछै आय।
बालक ह्वै की बालकी, जीवै की मरि जाय ॥१३३॥
दहिने स्वरके चलत ही, जो कोइ पूछै आय।
वाको बाँया स्वर चलै, बालक व्है मरि जाय ॥१३४॥
दहिने स्वर के चलत ही, जो कोइ पूछै बैन।
वाको दहिना स्वर चलै, बालक होय सुख चैन ॥१३५॥
बाँयें स्वरके चलत ही, आय कहै जो कोय।
लडकी होय जीवै नहीं, वाको दहिनो होय ॥१३६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बाँयें स्वर के चलत ही, जो कोइ पूछै बात।
वाको बाँयों स्वर चलै, बेटी होय कुसलात ॥१३७॥
दोनों स्वर सुषमन चले, कहै गर्भ की आय।
गर्भ गिरै माता दुखी, कष्ट होय मरि जाय ॥१३८॥
तत्व अकाशू चलत ही, जो कोइ पूछै बात।
छाया ह्वै बाढै नहीं, पेट हि मांहि बिलात ॥१३९॥
जो कोइ पूछै आय के, याको गर्भ कि नांहि।
दहिनो वाको स्वर चलै, साधे श्वासा मांहि ॥१४०॥
बंध हि और जो आय के, हित कर पूछै कोय।
बंध हि और सगर्भ ये, बहते स्वर नहि होय ॥१४१॥
चंद्र और जो आय के, तब पूछै जो कोय।
चंद्र और तो गरभ है, बहता स्वर जो होय ॥१४२॥

अथ श्वासा परीक्षा।

इंगला पिंगला सुषमना, नाडी कहिये तीन।
सूरज चंद्र विचार के, रहै श्वास लौ लीन ॥१४३॥
जैसे कछुआ समिटि के, आप हि मांहि समाय।
ऐसे ज्ञानी श्वास में, रहे सुरति लौ लाय ॥१४४॥
श्वासा आप विचार के, आयु जान नर लोय।
बीत जाय श्वासा जबै, तबही मृत्युक होय ॥१४५॥
इक्कीस हजार छः सौ चले, रात दिवस जो श्वास।
बीसा सौ जीवै वरष, होय अपन पौ नास ॥१४६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अकाल मृत्यु जो कोई मरै, होय भक्त के भूत।
बीत जाय श्वासा जबै, तब आवे जम दूत ॥१४७॥
चारौं संजम साधि के, श्वासा युक्ति मिलाय।
अकाल मृत्यु आवै नहीं, जीवै पूरी आय ॥१४८॥
सूक्ष्म भोजन कीजिये, रहिये रहनी सोय।
जल थोडासा पीजिये, बहुत बोल मत खोय ॥१४९॥
मोक्ष मुक्ति फल चाहिये, तजो कामना काम।
मन की इच्छा मेटिके, भजो सत्य निज नाम ॥१५०॥

सोरठा।

देहाध्यास मिटाय के, पांचन के तज कर्म।
आप हि आप समाय के, छूटे झूठ भरम ॥१५१॥
छूटे दृष्टि देह की, जैसी कहै तैसी रहै।
सो तुम कूं कहि दीन, धर्मदास यह मुक्ति है ॥१५२॥

साखी।

देह मरे जिव अमर है, पारब्रह्म है सोय।
अज्ञानी भटकत फिरे, लखै सो ज्ञानी होय ॥१५३॥
देह नहीं तो ब्रह्म है, अविनासी निरवान।
नित न्यारो तूं देह सों, देह कर्म सब जान ॥१५४॥
डोलन बोलन सोवना, भोजन करन अहार।
दुख सुख मैथुन रोग सब, गरमी सीत निहार ॥१५५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाति बरन कुल देह की, मूर्ति सूर्ति के नाम।
उपजै विनसै देह सो, पांच तत्त्व को गाम ॥१५६॥

पावक पानी वायु है, धरती और अकास।
पांच पचीस गुन तीन में, आय कियो तहं वास ॥१५७॥

घट उपाधि सों जानिये, करत रहै उतपात।
काम क्रोध और लोभ है, मोह माया लपटात ॥१५८॥

जिभ्या इन्द्रिय नीर की, नभ की इन्द्रिय कान।
नासा इन्द्रिय धरनि की, करि विचार पहिचान ॥१५९॥

त्वचा इन्द्रिय वायु की, पावक इन्द्रिय नैन।
इनको साधे सिद्ध जो, पद पावै सुख चैन ॥१६०॥

निद्रा जँभाइ आलस पुनि, भूख प्यास जो होय।
सत्यकबीर पांचौ कहैं, अग्नि तत्त्व सो जोय ॥१६१॥

रक्त पीत कफ तीसरो, बिंदु पसीना जान।
कहैं कबीर प्रकृति अहै, पानी सो पहिचान ॥१६२॥

हाड चाम नाडी कहूं, रोम और पुनि मांस।
पृथ्वी की प्रकृति अहै, अंत सबन को नास ॥१६३॥

बल करना अरु धावना, प्रसरन करन संकोच।
देह बढ़ै सो जानिये, वायु तत्त्व है सोच ॥१६४॥

काम क्रोध और लोभ है, मोह पुनि अहंकार।
तत्त्व अकाश प्रकृति इहै, नित न्यारो तूं सार ॥१६५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पांच पचीसौ एक है, इनको सकल सुभाव।
निर्विकार तो ब्रह्म है, आप अपन में पाव ॥१६६॥

निर्विकार निर्लेप तूं, जानहु देह विकार।
अपनी देह जानो मति, येहि ज्ञान ततसार ॥१६७॥

शस्त्र छेदी नहीं सकै, पावक सकै न जार।
मरि मीटै सो तूं नहि, गुरु गम भेद निहार ॥१६८॥

आंख नाक जिभ्या कही, त्वचा जानिये कान।
पांचौ इन्द्रिय ज्ञान की, जानै ज्ञान सुजान ॥१६९॥

गुदा लिग मुख तीसरा, हाथ पांव लखि लेह।
पांचौ इन्द्रिय कर्म की, इनही में सब देह ॥१७०॥

पृथ्वी हिरदे स्थान है, गुदा जानिये द्वार।
पीरो रंग पहिचानिये, पान खान आहार ॥१७१॥

तपत मध्य पावक बसै, नैन जानिये द्वार।
लाल रंग है अग्नि को, लोभ मोह अहंकार ॥१७२॥

जल को बासो भाल है, लिंग जानिये द्वार।
मैथुन कर्म अहार है, धोरो रंग निहार ॥१७३॥

वायु नाभि में बसत है, नास जानिये द्वार।
हरो रंग है वायु को, गंध सुगंध अहार ॥१७४॥

अकास सीस में बसत है, श्रवण जानिये द्वार।
शब्द हि शब्द अहार है, ताको श्याम विचार ॥१७५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारण सूक्षम लिंग है, ऐसे कहि असथूल ।
शरीर चार सो जानिये, मैं मेरी जड़ मूल ॥१७६॥

चित बुधि मन अहंकार जो, अन्तःकरन जु च र ।
ज्ञान सबन सो जानिये, कर कर तत्त्व विचार ॥१७७॥

शब्द स्पर्श अरु रूप रस, कहिये गंध सरूप ।
देह कर्म औ वासना, एक हि है निज रूप ॥१७८॥

निराकार है आदि तूं, अचल निवासी जीव ।
निरालंब निरबान तूं, अज अविनासी सीव ॥१७९॥

बांया कोठा अग्निका, दहिना जल परकास ।
मन हिरदे अस्थान है, पवन नाभि में वास ॥१८०॥

मूल कमल दल चार को, लाल पंखुरी रंग ।
गिरिजा सुत वासो कियो, छसौ जाप इक संग ॥१८१॥

कँवल षट् दल रंग पिरो, नाभी तले संभाल ।
षट् सहस्र तहां जाप है, ब्रह्म सावित्री नाल ॥१८२॥

अष्ट पंखुरी कँवल है, लील बरन सो नाल ।
हरि लक्षमी वासो कियो, षट् सहस्र जप माल ॥१८३॥

अनहद चक्र हिरदै बसै, द्वादश दल अरु श्वेत ।
षट् सहस्र तहां जाप है, सिव शक्ति जहां हेत ॥१८४॥

षोडश दल को कँवल है, कंठ वासना रूप ।
जाप सहस्र तहवां जपै, भेद लहै अति गूप ॥१८५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अग्नि चक्र दो दल कमल, त्रिकुटी ध्यान अनूप।
जाप सहस्र तहवां जपै, पावै ज्योति सरूप ॥१८६॥

सहस्र दलन को कमल है, गगन मंडल में वास।
जाप सहस्र तहवां जपै, तेज पुंज परकास ॥१८७॥

योग युक्ति करि खोजि ले, सुरति निरति करि चीन्ह।
दश प्रकार अनहद बजे, होय जहां लौलीन्ह ॥१८८॥

तीन बंध नौ नाडिका, दसौ वायु को जान।
प्रान अपान समान है, अरु कहिये ऊदान ॥१८९॥

व्यान बंध अरु किरकिरा, कूर्म वायु को जीत।
नाग धनंजय देवदत, दसौ वायु ह्वै मीत ॥१९०॥

दसौं द्वार को बंध करि, उत्तम नाड़ी तीन।
इंगला पिंगला सुषमना, केलि करे परवीन ॥१९१॥

करते अरपन नाम को, तर गये पतित अनेक।
अनहद धुनि के बीच में, देखा खेल अनेक ॥१९२॥

पूरक करै कुंभक करै, रेचक वायु उतार।
ऐसे प्राणायाम कर, सूक्ष्म कीजै हार ॥१९३॥

धरती बंध लगाय के, दसौं वायु को रोक।
मस्तक वायु चढ़ाय के, जाय अमर पुर लोक ॥१९४॥

पांचौं मुद्रा साधि के, पावै घट का भेद।
नाड़ी शिखर चढाय के, षट चक्रन को छेद ॥१९५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

योग युक्ति सो कीजिये, कर अजपा को जाप ।
आपु हि आप विचारि के, परम तत्त्व को ज्ञाप ॥१९६॥

सूद्र वैश्य यह शरीर है, ब्राह्मण अरु रजपूत ।
बूढा बालक तरुन ना, सदा ब्रह्म इक रूप ॥१९७॥

काया माया जानिये, जीव ब्रह्म है मीत ।
काया छूटे सुरती मिटे, परम तत्त्व में नीत ॥१९८॥

पाप पुण्य की आस तजो, तजहू मन असथाप ।
काया मांहि विकार तजु, जपहू अजपा जाप ॥१९९॥

आप भुलाना आप में, बंधा आपहि आप ।
जाको तूं ढूंढत फिरै, सो तूं आपो आप ॥२००॥

इच्छा देह विसारि के, क्यौं नहि ह्वै निर्वास ।
तो तूं जीवन्मुक्त है, तजो मुक्ति की वास ॥२०१॥

पवन भये आकास ते, अग्नि वायु सों होय ।
पावक सों पानी भयो, पानी धरती सोय ॥२०२॥

धरती मीठो स्वाद है, खार स्वाद सो नीर ।
अग्नि चरपरो स्वाद है, खाटो स्वाद समीर ॥२०३॥

खाटो मीठो चरपरो, खारै प्रेम न होय ।
तबही तत्त्व विचारिये, चार तत्त्व में सोय ॥२०४॥

स्वाद भिन्न अरु रंग है, और बताई चाल ।
पांच तत्त्व की परख है, सिध पावै ततकाल ॥२०५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्रिकोनै पावक चलै, धरती तो चौरंग।
शून्य स्वभाव अकाश को, पानी लंबो संग ॥२०६॥

अग्नि तत्त्व गुण तामसी, रजगुन समझो वायु।
पृथ्वी नीर सतो गुनी, नभ को अस्थिर भाय ॥२०७॥

नीर चलै जब श्वास में, रन ऊपर चढ मीत।
वैरी को सिर काटिके, घर आवै रन जीत ॥२०८॥

पृथ्वी के परकास में, युद्ध करै जो कोय।
दो दल रहे बराबरी, हार वायु में होय ॥२०९॥

अग्नि तत्त्व के चलत ही, युद्ध करने मति जाय।
हार होय जीतै नहीं, अरु आवे तन घाय ॥२१०॥

तत्त्व अकास में जो चलै, उहां रहै जो जाय।
रन मांहीं काया तजै, घर नहीं देखै आय ॥२११॥

जल पृथ्वी के योग में, गर्भ रहै जो पूत।
वायु तत्त्व में छोकरी, और सूत को सूत ॥२१२॥

पृथ्वी तत्त्व में गर्भ जो, बालक होय सो भूप।
धनवंता सो जानिये, सुन्दर होय सरूप ॥२१३॥

अग्नि तत्त्व के चलत हीं, गर्भ हि में रहि जाय।
गर्भ गिर माता दुखी, होते ही मरि जाय ॥२१४॥

वायु तत्त्व सुर दाहिनो, करै पुरुष जो भोग।
गर्भ रहै जो ता समय, तन आवै कछु रोग ॥२१५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आसन संजम साध के, दृष्टि श्वास के मांहि ।
तत्त्व भेद तब ही मिले, विन साधे कछु नाहि ॥२१६॥
आसन पद्म लगाय के, एक बरन नित साध ।
बैठे सोये डोलते, श्वासा हिरदै राध ॥२१७॥
नाम नासिका मांहि करि, सोहं सोहं जाप ।
सोहं अजपा जाप है, छूटे पुँन औ पाप ॥२१८॥
भेद स्वरोदय बहुत है, सूक्षम कहि समुझाय ।
ताको सुमति विचार ले, अपने मन चित लाय ॥२१९॥
धरनि टरै गिरिवर टरै, ध्रूव टरै सुन मीत ।
ज्ञान स्वरोदय ना टरै, कहैं कबीर जग जीत ॥२२०॥
योग युक्ति सों भक्ति करि, ब्रह्मज्ञान दृढ होय ।
आतम तत्त्व विचारि के, अजपा श्वास समोय ॥२२१॥
ज्ञान स्वरोदय सार है, सतगुरु कहि समुझाय ।
जो जन ज्ञानी चित धरै, ब्रह्म रूप को पाय ॥२२२॥
काया को निज भेद है, धर्मनि सुनो सुजान ।
ज्ञान स्वरोदय खोजि के, येहि बचन परमान ॥२२३॥
सब योगन को योग है, सब ग्रंथन को मीत ।
सब योगन को ज्ञान है, सत्य कबीर यह गीत ॥२२४॥

इति सद्गुरु कबीर साहिब का ज्ञान स्वरोदय संपूर्ण ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पवन स्वरोदय ।

श्रीसतगुरु तुव चरण पर, शीश धरों शत बार ।
पवनसार वर्णन करों, मोतिदास निरधार ॥ १ ॥
गुरुगम भेद विचारके, ग्रन्थन का मत देख ।
मोतिदास संक्षेप कहि, सारंसार विशेष ॥ २ ॥
नाड़ी चारों (सब) आठ सत, और बहत्तर हजार ।
सबको मूल जो नाभि है, मोतिदास निरधार ॥ ३ ॥
सब नाड़िन में मुख्य दस, दस में तीन दिचार ।
इड़ा पिंगला सुषमना, मोतिदास त्रय सार ॥ ४ ॥
डेरा इड़ा सु चँद सुर, सोई यमुना जान ।
दहिनो पिंगला सूर्य सुर, गंगा ताको मान ॥ ५ ॥
दोनौ स्वर सम सरस्वती, सुपमन कहिये सोय ।
यहै त्रिवेणी स्पृष्टिये, सर्व पाप क्षय होय ॥ ६ ॥
नाभि कमलदल अष्ट है, पांच तत्त्व तहँ बास ।
पृथ्वी जल अरु अग्नि है, वायुतत्त्व आकाश ॥ ७ ॥
फिरत जीव सब दलनपर, दलपति भिन्न सुभाव ।
मोतिदास वर्णन करों, सुनो शिष्य सतभाव ॥ ८ ॥
पूर्व दलनपर ज्ञान मत, अग्नि जु शुद्ध सुभाय ।
क्रोध करत जिव जानिये, दक्षिण दल पर जाय ॥ ९ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नैऋत्य दल पर जाय जिव, बुद्धि विवेक प्रकास ।
पश्चिम दल पर जातहीं, हांसी मोद हुलास ॥१०॥
देश दिशंतर मन उडे, वायव्य दल जिव जान ।
सम सुभाव जिव करत हैं, उत्तर दल पर आन ॥११॥
राजस भोग जु कामना, जिव कर दल ईशान ।
इक दलते दूजे (दल) गवन, तब जिव सुमरण ध्यान॥१२॥
होय उदय सूरज जबे, जीव पूर्व दल जाय ।
पहिले तरें ते ऊपरे, फेर तरे जो आय ॥१३॥
श्वासा तीस आकाश की, साठ वायुकी जान ।
नब्बे श्वास जो अग्निकी, जल बीसा सौ मान ॥१४॥
पृथ्वी तत्त्व की डेढ सौ, श्वासा को परमान ।
साढि चार सौ श्वास पुनि, पांच तत्त्वकी जान ॥१५॥
इक दल पर दो बार जिव, उतर चढे फिर आय ।
श्वासा नौ सौ होत हैं, मोतिदास समुझाय ॥१६॥
यहि बिधि आठउ दलन पर, फेरी जीव कराय ।
सात सहस दो सौ अधिक, श्वासा चलती जाय ॥१७॥
आठ जाम दल आठ पै, तीन बखत जिव जात ।
इक्किस सहस्र छै सौ अधिक, श्वास चलत दिनरात ॥१८॥
नित श्वासा इतनी चले, बढती चले न कोय ।
बीसा सौ वर्षे जिये, साध साधना लोय ॥१९॥
क्रौड ब्यानवे चलत हैं, उम्मर भर की श्वास ।
गुरुमुख सुन लखि शास्त्रको, बरणी मोतीदास ॥२०॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अकाल मृत्यु तन छूटही, भूत होय भरमंत।
ताते साधो साधना, कहत वचन श्रुति संत ॥२१॥
थिर द्वादश मग अष्टदश, बत्तिस सयन मँझार।
भोग करत चौसठ चले, मोतिदास निरधार ॥२२॥
ताते उम्मर घटत है, अल्प मीच बिच होय।
मन चाहे तबलग जिये, साधन करे जु कोय ॥२३॥
डेरो स्वर दिन को चले, दहिनो रात चलाव।
देह रोग व्यापै नहीं, जीवे पूरी आव ॥२४॥
झाडे अरु अस्नान पुनि, भोजन कर परबीन।
दहिने स्वरके काज ये, मोतिदास कह दीन्ह ॥२५॥
जल पीवन पेशाब पुनि, बांयें स्वर के मांहिं।
मोतिदास या रहन सो, देहरोग होय नाहिं ॥२६॥
शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, भोरही चंद्र चलाव।
आगे डेरी चार डग, पंद्रह दिन सुख पाव ॥२७॥
कृष्णपक्ष परिवा लगे, सूरज लीजे प्रात।
तीन पांव दहिने धरे, सुख पंद्रह दिन जात ॥२८॥
चंद्रवार को प्रातहीं, उठत चंद्र स्वर लेय।
बांइ चार डग पहिल धरि, निशिवासर सुख देय ॥२९॥
सूरज दिन को भोरहीं, उठतन सूर्य चलाव।
पहिले तिन पग दाहिने, रातदिना सुख पाव ॥३०॥
ईतवार मंगल कहों, और शनीचर वार।
सूरजके दिन तीन ये, मोतिदास निरधार ॥३१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सोमवार बुध शुक्र दिन, और बृहस्पति पेख ।
चंद्रयोग में सुफल ये, मोतीदास विशेष ॥३२॥

परे बृहस्पति चंद्र सुर, तिथि चंदा परमान ।
सूरज स्वरमें शनि रवि, मंगल भोरहि भान ॥३३॥

शुक्ल पक्ष परिवां लगे, तिथि चारों परमान ।
फिर रवि चंदा फिर रवि, फिर रवि इंदू जान ॥३४॥

कृष्णपक्ष के आदि में, तीन दिना रवि लेख ।
पुनि चंदा पुनि रवि सही, पुनि चंदा रवि लेख ॥३५॥

सूरज दिन चंदा बहै, चंदा दिन रवि होय ।
ता दिन विघ्न लागे कछू, हानि ताप दुख होय ॥३६॥

परिवाँ चंदा को लगे, सूरज पावे प्रात ।
हानि ताप मृत्यु करे, मत जानो कुशलात ॥३७॥

सूरज की परिवाँ जबै, चंद उदय जो होय ।
विघ्न लगे तन मन दहे, शुभ कारज मति जोय ॥३८॥

ताते साधन कीजिये, ले गुरुसे उपदेश ।
तन मन आनंद सो रहे, छूटे विघ्न कलेश ॥३९॥

रुई गदेला मांझ की, बत्ती जबर करंद ।
दिनको सूरज बंद कर, रात चंद्र कर बंद ॥४०॥

गमन दाहिने स्वर करो, पूरब उत्तर देश ।
पश्चिम दक्षिण चंद्र स्वर, सुख संपत्ति फल बेस ॥४१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूरब उत्तर चंद्र स्वर, पश्चिम दक्षिण सूर।
होगी हानी ताप मृत्यु, जाय देह को नूर ॥४२॥

बस्तर भूषण पहिरिये, ब्याह दान कर प्रीति।
राजतिलक चेला करो, बाँयें स्वरकी नीति ॥४३॥

घरकी नींव जु डारिये, रहिये नव घर मांहिं।
बोये नाज जु खेतमें, चंद्रयोग शुभ आहिं ॥४४॥

औषधि दीजे योग कर, बूटि कल्प कर कोय।
ताल कूप खोदे कहूँ, चंद्रयोग शुभ होय ॥४५॥

मंत्र साध पोथी लिखो, विद्या और पढ़ाव।
थिर कारज जेते सकल, चंद्र योग के भाव ॥४६॥

परसन भोजन मैथुना, युद्ध वाद ले ब्याज।
कुंजल वाहन काज दे, दहिने स्वर के काज ॥४७॥

बैरी घर जो जाइये, ऋण मांगन जो जाय।
राज दरशको गौन कर, दहिने स्वरको लाय ॥४८॥

उच्चाटन अरु वशिकरन, मारन साधे जंत्र।
दहिने स्वरके काज ये, आकर्षन जो मंत्र ॥४९॥

नाव बैठ जल पैरिये, शास्त्र शिष्य कर सैन।
चर कारज जेते सकल, दहिने स्वरके ऐन ॥५०॥

सुषमन चलत न चालिये, योग ध्यान कर मीत।
और कार्य वरजत सकल, करें होय विपरीत ॥५१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मैथुन भय श्रम मरत में, सुषमन वित्तम होय।
सहज कबहुँ चाले नहीं, मोतीदास भल जोय ॥५२॥
चैत्र सुदी परिवा लगे, प्रात पृथ्वी जल देख।
आसन पद्म लगाइये, पश्चिम मुख कर पेख ॥५३॥
बहु वरषा रु प्रजा सुखी, अरु सुरभिक्ष प्रधान।
दहिने पृथ्वी जल चले, मध्यम साल बखान ॥५४॥
अग्नितत्व ता दिन चले, बरषा थोरी होय।
आग लगे मरही पड़े, अन्नसु महँगा जोय ॥५५॥
वायु तत्व आँधी करै, वरषा सूक्षम लाग।
मूसा टिड्डी आवहीं, वायु पीर सीतांग ॥५६॥
जग में विग्रह होयगी, अँन तृण थोरा जान।
संवत भर फल यों करे, मोतीदास बखान ॥५७॥
तत्व अकाश बरषा नहीं, मरही काल परंत।
सुषमन ह्वै आपुन मरे, परजा विघ्न अनंत ॥५८॥
जोई परीक्षा चैत्र की, सोई मेष संक्रात।
वायु अग्नि सो निष्ट हैं, जल पृथ्वी कुसलात ॥५९॥
पृथ्वी पीत रँग वैस है, आंगुर बारह जान।
चिकनो मीठो स्वाद है, पूरब दिशा बखान ॥६०॥
बिप्र वरण जल तत्व है, आंगुर सोरा जान।
श्वेत रंग पश्चिम दिशा, खारो स्वाद बखान ॥६१॥
अग्नि लाल रंग चरपरो, आंगुर चार प्रमान।
बरन क्षत्री दक्षिण दिशा, मोतिदास पहिचान ॥६२॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हरो वायु उत्तर दिशा, खाटो स्वाद विचार।
आंगुर आठै शूद्र वरण, मोतिदास निरधार ॥६३॥

दोई स्वर जो चलत हैं, बाहर कढ़ ना कोय।
करुवा स्वाद कारो वरण, तत्त्व अकाश है सोय ॥६४॥

एतवार बुधवार के, भोर पृथ्वी ततराज।
शुक्र मंगल प्रातही, अग्नि तत्वको साज ॥६५॥

वायु तत्व गुरुवार को, भोर ही राज करंत॥
सोमवारको प्रात जल, मोतिदास बरषंत ॥६६॥

भोर शनीचर के दिना, आवत तत्व अकाश।
दूज वायु तीजे अग्नि, फिर जल पृथ्वी वास ॥६७॥

जौन तत्व अरु जाहि दिन, भोर चलत है आय।
एक तत्व इक २ घरी, स्वर महं राज कराय ॥६८॥

प्रश्न करे जो आयके, तबहीं तत्व विचार।
पृथ्वी तत्वमें लाभ झर, जल जल्दी निरधार ॥६९॥

अग्नि तत्त्वमें हानि करु, निरफल कहो अकाश।
पहल तत्वको समुझके, भाषो मोतीदास ॥७०॥

(जो) कोई पूछे आयके, (पर)देश गये की बात।
बेग आय जल तत्व कहो, पृथ्वी कहो कुशलात ॥७१॥

वायु तत्व परदेश ते, गयो औरही देश।
अग्नि तत्व बेजार कहु, अकाश तत्व मृतुजेश ॥७२॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(जो) कोई पूछे आय के, रोगी को परसंग ।
बहते सुर जीवे कहो, शून्य दिशा मृतु भंग ॥७३॥
पूँछत में सुर बहत हो, तुरत सुन्न हो जाय ।
ईश्वर जो रक्षा करे, तौ रोगी मर जाय ॥७४॥
पूँछत में सुर बंद हो, हालहि पूरण होय ।
ईश्वर जो मारन चहे, रोगी जीवे सोय ॥७५॥
चोरी वस्तु गई कछू, पूछै बहती श्वास ।
मिले बस्तु वासौं कहो, बरणी मोतीदास ॥७६॥
बिषया जो विषहर डसो, बहते सुर पूछंत ।
बिष भुगती जीवे कहो, बँद सुर होय मरंत ॥७७॥
बहुत दिना ते खबर नहि, परदेशी की पाय ।
पूछे बहते सुर कुशल, विघ्न बंद सुर आय ॥७८॥
कोई पूछे आयके, गर्भवती की बात ।
बेटा होइ कै छोकरी, मरे कि रह कुशलात ॥७९॥
पूछत डेरो सुर चले, कन्या गर्भ बताव ।
दहिने सुरके चलतहीं, पुत्र होय सतभाव ॥८०॥
पूछत डेरी बगल हो, दहिनो सुर परकाश ।
पुत्र होय वाको कहो, माताको व्है नाश ॥८१॥
प्रश्न करत जल तत्व हो, पुत्र गर्भ में जान ।
भूमि वायु कन्या सही, अग्नि गर्भ को हानि ॥८२॥
पूछत तत्व अकाश हो, मरो गर्भ में बाल ।
कै माता को कष्ट हो, (कै) रहे गर्भ में छाल ॥८३॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूंछत में सुर दो बहे, गर्भ मांहि युग भाप।
शून्य दिशा गर्भ शून्य कहु, मोतिदास अभिलाष ॥८४॥

ऋतुवंती जो स्नान कर, पुष्य नक्षत्र जब आय।
दहिने सुर त्रिय भोगई, बांझ पुत्र फल पाय ॥८५॥

बाँये सुर रति कीजिये, तो कन्या होय बीर।
जल पृथ्वी बीरज जमे, और न जामे नीर ॥८६॥

दहिनो सुर हो पुरुष को, डेरो सुर त्रिय देह।
जल पृथ्वीमें रति करे, बांझ पुत्र फल लेह ॥८७॥

निकसत श्वासा बिज जमे, थोरी उम्मर होय।
श्वास देहमें बिज जमे, बडी आयु सुन लोय ॥८८॥

अकाश तत्त्व में बिज जमे, होतइ मरे बखान।
वायु तत्त्व योगी कहो, की दिसंतरि जान ॥८९॥

अग्नि तत्त्व रोगी सही, जीवे थोरी आव।
नीर तत्त्व यश भोगिया, साहू पृथ्वी पाव ॥९०॥

युद्ध करन कोई चले, दहिनो सुर चढि बाज।
बायें फौज दे शत्रुकी, लडे जीत शुभ काज ॥९१॥

पक्ष वार तिथि सूर्य की, पृथ्वी तत्त्व ले मीत।
दिशा सूर्य सुर दाहिनो, एक अनेकन जीत ॥९२॥

दोनों आनि जुरे जब, दहिनो सुर जब होय।
जो कोई पहिले लडें, जीत तासुकी होय ॥९३॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो चंदा सुर चलत हो, तो निज गहु तलवार ।
आवन दीजे शत्रुको, हो जगमें यश सार ॥९४॥
दूर युद्ध को चंद्र सुर, दिशा पक्ष तिथि वार ।
मोतिदास जल तत्त्व ले, डेरो डग धर वार ॥९५॥
खेत मांझ जब जाइये, सूरज सुर ले बीर ।
जीत होय हारे नहीं, रहे फौज में मीर ॥९६॥
चलते सुर दिशि आयके, पूले चलती श्वास ।
पूछनवारो जीति है, होय शत्रु का नाश ॥९७॥
बंद सूर दिशि आयके, बंदइ सुर पूछंत ।
पूछनवारो हारि है, घरे बैठ निहचिंत ॥९८॥
ऊंचे नीचे सामने, बाँये पूछे कोय ।
चार चंद्र घर जानिये, पूरे अक्षर होय ॥९९॥
पीछे नीचे दाहिने, तीन सुरज घर जान ।
ऊने अक्षर वचनके, कारज सिद्ध बखान ॥१००॥
शून्य दिशा हो पूंछही, पृथ्वी तत्त्व जो होय ।
घाव लगो कहुँ ओद्रमें, युद्ध प्रश्न करे कोय ॥१०१॥
पूंछत में जल तत्त्व होय, लगो पांव में घाव ।
अग्नि घाव हृदये कहो, मोतिदास सतभाव ॥१०२॥
घाव हाथ में भाषिये, वायु तत्त्व को देख ।
सिरमें घाव जु जानिये, तत्त्व अकाश को पेख ॥१०३॥
शत्रु फौज नहि घेरिये, दहिने पूंछे कोय ।
सूर्य सुर कहो जीत है, जाय लडो रन सोय ॥१०४॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राज राव उमराव नर, लडन खेत में जाय।
पूंछे जिनके नाम ले, को जीते रन मांय ॥१०५॥
पहल नाम ले जीत कहु, बहते सुर को जान।
नाम पाछले हार है, शून्य दिशामें मान ॥१०६॥
कोई पूछे युद्धको, होय नहीं की बात।
जल सूरज सुर युद्ध होय, पृथ्वी तत्त्व कुशलात ॥१०७॥
ऊने अक्षर सूर्य सुर, पूछे जीत बखान।
पूरा अक्षर चंद्र सुर, निहचै जीते मान ॥१०८॥
श्वासा नीची चलत में, प्रश्न करे जो आय।
जातहि जीते शत्रुको, मोतिदास सतभाय ॥१०९॥
ऊरध श्वासा चलत में, पूछत हार बखान।
मोतिदास वासों कहो, युद्ध करन मत जान ॥११०॥
कोई बात को प्रश्न कर, चलते सुर में आय।
ताको कारज सुफल कहु, अफल शून्य सुर पाय ॥१११॥
नृप गुणज्ञ धनवंत पै, पातसाह पै जाय।
ऊने अक्षर नामके, भेंट सूर्य सुर जाय ॥११२॥
सूरज सुर में तीन डग, आगे दहिनो पाय।
तो सुखसंपत बहु मिले, मोतिदास सतभाय ॥११३॥
पूरे अक्षर नाम के, भेंट चंद्र सुर माँह।
आगे डेरी चार डग, सुख संपत फल पाह ॥११४॥
बैठ सभा में वाद कर, वादी दहिनो राख।
वाद जीत हारे नहीं, मोतिदास सतभाष ॥११५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन ऊगे ते सूर्य सुर, पहर एक ठहरंत।
तो कुटुंब में नाश ह्वै, चित्त उदास करंत ॥११६॥
दोय पहर सूरज चले, होवै धनको नाश।
धाम छुटे तीजे पहर, बरणी मोतीदास ॥११७॥
चार पहर सुर दाहिनो, देह रोग मृतु होय।
पांचै राजबिरोध है, छठे क्रोध घर होय ॥११८॥
बैर होय साते पहर, आठे तनकी हानि।
तीन वर्ष काया रहे, दिवसरैन चल भान ॥११९॥
दोय रात अरु दोय दिन, सूरज सुर भरपूर।
दोय बरष काया रहै, फेर रहे नहि नूर ॥१२०॥
तीन रात दिन तीन लौं, जो सूरज सुर पेख।
एक बरष काया रहै, फेर मृत्यु गति लेख ॥१२१॥
सूरज सुर दस दिन चले, छठे मास मृतु होय।
दिन रवि चंदा रातको, एक मास मृतु सोय ॥१२२॥
निसबासर चंदा दिना, सूरज सुर परकाश।
पलभर चंदा ना चले, पंद्रह दिन मृतु बास ॥१२३॥
नौ दिन भ्रूकुटी ना लखे, अनहद बँद दिन सात।
सिर धर पहुँचा दीर्घ लख, पँचर्ये दिन मर जात ॥१२४॥
नासाको मित तीन दिन, रसना मित दिन एक।
चार घरी मित सुषमना, मोतिदास अवसेक ॥१२५॥
चले पहर भर चंद्रमा, लाभ होय आनंद।
चौदह घरि चंदा चले, तो अनेक सुखकंद ॥१२६॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार आठ बारह दिना, सोरह बीस बखान।
इतने दिन चंदा चले, बढ़ती आव बखान ॥१२७॥
रेचक पूरक कुंभके, योग करे जो कोय।
काल बचावें संत सो, मोतिदास सिद्ध होय ॥१२८॥
आसन निद्रा दृढ करे, अन्न जल थोरो खाय।
अमी पिये सुरमत चले, ज्ञान त्रिकालहि पाय ॥१२९॥
नीर पवन दोई गहे, सुखपत बिंद रखाव।
काल कर्म दुख भय मिटे, मन वांछित फल पाव ॥१३०॥
पवन सार नित पाठकर, सुर मत निरख चलंत।
लछमी तिन के चरण की, दासी होय रहंत ॥१३१॥
काल योगिनी डर नहीं, भद्र योग मत लेख।
लगनवारतिथि मत गिनो, स्वरमत गहे विशेष ॥१३२॥
तिस दिनस्वरकोसमझिये, नासा दृष्टि रमाय।
मोतिदास सब सिद्धि लहै, सकल विघ्न नसि जाय ॥१३३॥
पवनसार यह ग्रंथ है, सूक्षम कह्यो विचार।
मोतिदास बरणन कियो, सब ग्रंथन को सार ॥१३४॥
संवत अठारह सौ गये, सत्तासी की साल।
कातिक सुद दूज तिथि, चंदा वार विसाल ॥१३५॥
ता दिन ग्रँथ पूरण भयो, सतगुरु के उपदेश।
लघु मति मोतीदासने, कियो ग्रंथ परवेश ॥१३६॥

॥ इति श्री पवन स्वरोदय ग्रन्थ समाप्तः ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तत्त्व स्वरोदय ।

सर्व शास्त्र को सार है, चार वेद को जीव ।
यह मत समय विचारि है, ताहि मिलेंगे पीव ॥ १ ॥

पवन चले पानी चले, औ पृथ्वी चलि जाय ।
तत्त्व स्वरोदय ना चलै, संत लेहि अरथाय ॥ २ ॥

शनि वासरे दहनी नाडी, कृष्ण पक्ष विशेष । गुरु, सोम वासरे बाँयी नाडी, शुक्ल पक्ष विशेष । मेष, सिंह, धन, तुला, मिथुन और कुंभ ये छ राशि सूर्य—उदयकी । वृष, कन्या, वृश्चिक, मक्र, मीन और कर्क ये छ राशि चंद्र-उदयकी ।

संक्रान्ति लग्नः-सूर्य में जो चन्द्रमा बहै तो अशुभ है, औघट चोट होय । और कर्क, मक्र की संक्रान्ति में सूर्य बहै तो अढाई मास में अपनी मृत्यु निश्चय जानिये । और अपने लग्न में संक्रान्ति में सूर्य बहै तो जौन कार्य कीजे सो सिद्ध होय ।

अथ वार विचारः-सोमवार को सूर्य बहै तो कछु चिन्ता उपजावै । और मंगलको चन्द्रमा बहै तो धन की हानि जानिये । बुध को सूर्य बहै तो संगमें विग्रह जानिये । जो पल २ ऊपर को स्वर बदले, प्रमाण भर न चलै तो अढाई

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिन में अपनी मृत्यु जानिये। या कुछ बडा डंडक लागे ताको साधन कहते हैं:—

"जो स्वर चलै सो दीजै पाँव, कहा करेगा यम का राव।"
सूर्य वासरे चन्द्र अशुभ है, चन्द्र वासरे सूर्य अशुभ है।

अथ चन्द्रमा फल (स्थिर) को विचार :— चन्द्रमा में गमन कीजै, कपड़ा पहिरिये, मँत्र कीजै, धर्म कीजै, गढ–कोट नींव दीजै, तालाव बंधाइये, कुँवा बनवाइये, घर बंधाइये और प्रवेश कीजिये।

अथ सूर्य फल :– व्यापार कीजै, भोजन कीजै, मैथुन कीजै, घोडा–हाथी सवारी कीजै, नाव पर चढिये, समर कीजै।

अथ मंदाग्नि को विचार :– दहिने स्वरमें भोजन कीजै, सूर्य को ऊपर देके सोइये तो अग्नि बढे।

' शशि सोवै सूरज भख, उभे न अँचवै नीर।
कहैं कबीर वा दासको, निर्मल होय शरीर ' ॥ ३ ॥

अथ युद्ध को विचार:– जब शत्रु पर कोऊ चढै तब दहिने स्वरमें चलै तो शत्रु को जीतै। बाँये स्वरमें हारै। बाँये स्वरमें घर सों निकसे तो शुभ होय।

' दोनों अनी जुरे जबै, जो कोइ पूछे आय।
तब जेही स्वर चलत होय, ते पूरा कहलाय ' ॥ ४ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जो पूरे घर पूछै आई, जिनका नाम प्रथम जो लेई; सो जीतै । और सूने घर पूछै, प्रथम नाम लेय; सो हारै । जेहि तरफ शत्रु का सैन्य होय ताहि तरफ अंग राखै तो अपने सैन्यको घाव न लगे । और शत्रुके सैन्यके तरफ को अपना चले जो स्वर राखै ते सरदार, उस तरफ का कोई घाव न आवे ।

अथ देश भेदः—पूर्व, उत्तर चन्द्र दिशा । पश्चिम, दक्षिण सूर्यदिशा । तहां युद्ध के समय सूर्य नाडी चलती होय तो चन्द्रमा की दिशा लीजै । और चन्द्रमा की नाडी चलती होय तो सूर्य की दिशा लीजै । यह विचार दिशा लेवै तो जय होवै और पांच असवार–पचीस असवार को जीतै विशेष ।

अथ गमन भेदः—सूर्य नाडी चलती होय तो चन्द्रमा दिशा जाय तो शुभ है । और जो स्वर चलता होय उसी दिशा को जाय तो मार्ग में विशेष भय होय, उपद्रव होय ।

हर नाडी के चार चार लक्षण :—दहिने, आगे, पीछे चलै तो निश्चय इन घर पूर्ण सूर्य रहता है । बाँये, आगे, उँचै, बैठे; इन घर चन्द्र पूर्ण रहता है । ताका प्रश्नः—चन्द्र स्वर चलता होय और चन्द्रमा को दिन होय तो सुकाल होय । और सूर्य घर में पूछै, सूर्य होय तो शुभ होय । अरु सूर्य घर होय पूछै अरु चन्द्रमा होय तो कार्य विलंबसे होय ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ पांच तत्त्व को विचार।

प्रथम आकाश, दूजे वायु, तीजे अग्नि, चौथे जल और पाँचवें पृथ्वी। जल तत्त्व अपने को फल करता है। आकाश, वायु और अग्नि दहिने स्वर में शुभ दायक हैं। जल और पृथ्वी बाँये स्वर में शुभ हैं। सत्त भाव को शुभ मंत्र सिद्ध होय।

अथ तत्त्व को विचारः—आकाश तत्त्व; रंग कारो, स्वाद फीको, सबसे जुदा और सर्व के बीच में रहता है। सर्व कर्म का नाश करता है और मोक्षदाता है। ताके ध्यान को मंत्र, "ॐ रँ–गँ–हँ–सँ नमः।" जाप एक हजार १०००, माला काठकी।

वायु तत्त्व लक्षणः—रंग हरो, रूप भयानक, स्वाद खट्टो, तिरछा चलता है। ताके ध्यान को मंत्र, "ॐ नमः।" जाप आठ हजार ८०००, माला सर्व धातुकी। जौंलौं दहिने स्वर में वायु तत्त्व बहै तबलग मंत्र जाप करै तो शत्रु का नाश होय।

अग्नि तत्त्व लक्षणः–वर्ण क्षत्री, रंग लाल, त्रिकोणाकार, स्वाद चरपरा, ऊपर को चलता है। आंगुल चार प्रमाण। ताके ध्यान को मंत्र, "ॐ अँ–गँ–रँ–गँ नमः।" जाप एक हजार १०००, माला गुंजकी। जब लों दहिने स्वर में तत्त्व बहै तबलों मंत्र जाप करै तो शत्रु का नाश होय।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जल तत्त्व लक्षणः—दहिने स्वर में, वायु स्वर में, वर्ण ब्राह्मण, रंग श्वेत, गोलाकार, स्वाद कषायला, नीचे को चलता है। आंगुल सोलह प्रमाण है। ताके ध्यान को मंत्र, "ॐ मँ–गँ नमः।" जाप सोलह हजार १६००० माला मोती की। जब लग जल तत्त्व बहै तब लग इस मंत्र को जाप करै तो सर्व कार्य सिद्ध होय।

पृथ्वी तत्त्व लक्षणः—वर्ण शूद्र, रंग पीरो, स्वाद मीठो, चलै सूधो, आंगुल बारह प्रमाण है। ताके ध्यान को मंत्र, "ॐ –अँ–गँ नमः।" सर्व सुख को दाता है। जाप बारह हजार १२०००, माला राम रज की। जब लौं बायु स्वर में पृथ्वी तत्त्व बहै तब लौं मंत्र जाप करै, ताको फल समस्त है अरु ध्यान विशेषते मोहनभोग मिले। सर्व रोग का नाश होय।

अथ गर्भ विचारः—रात्रिके समय श्वास चढ़ावै, बीज देवै तो गर्भ रहै। विशेष वृद्ध अवस्था लों जिये। अरु श्वास उतरतेमें बीज देय तो थोडी उमर होय। और भोग करते समयमें पुरुषको दहिनो स्वर होय अरु स्त्रीको डेरो (बाँयो) स्वर होय तो कामदेवके समान लडका हो। और पुरुषको डेरो होय, स्त्री को दहिनो होय तो पुत्री होय। अरु हर-हमेश सूर्यमें बीज देवै तो पुत्र होय।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ गर्भ तत्त्व भेदः—वायु तत्त्वमें गर्भ रहै तो झूठा होय, बातें बहुत करै, बहुत फिरै। तेज तत्त्वमें गर्भ रहै तो रोगी होय। और भोग करते समय पृथ्वी तत्त्व होय तो भाग्यवान पुत्र होय, भोगी होय, धनवान होय, धैर्यवान होय। जल तत्त्वमें बीज जमे तो राजसी पुत्र होय।

अथ गर्भ प्रश्नः—जो कोई पूछै कि इस स्त्रीके लडका होगा या लडकी तो, जो सूर्य चलता हो तो लडका होय और चन्द्र चलता होय तो लडकी होय।

अथ काल जानने का विचारः—दिन रात सूर्य बहै तो तीन वर्ष का यार (आयु) है। दो दिन दो रात सूर्य रहे तो दो वर्ष का यार है। तीन दिन तीन रात सूर्य बहै तो एक वर्ष का यार है।

देश विचारः—चैत्र वदि परिवाको मुख पश्चिम करके बैठे, पांच तत्त्वको विचार करे। प्रातःकाल वायु तत्त्व होय तों मूसा, टीडी आवे, पवन बहुत बहै, मेघ थोडा बरषै, दुर्भिक्ष होय। और अग्नि तत्त्व होय तो अग्नि प्रचंड होय, युद्ध बहुत होय, मेघ थोडा बरषै, बराही को रोग लगे। पृथ्वी तत्त्व होय तो मेघ बरषै, रोगका नाश होय, अन्न समस्त बना रहे। जल तत्त्व बहै तो मेघ बहुत बरषा करे, मनुष्य आनंद रहे, उपद्रव का नाश होय। आकाश तत्त्व बहै तो मकरी परे, काल परे, रोग आवे। अंदर सवा दो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

घडी पूरो स्वर मूंद रहै तो आपको गाफिल न रहो चाहिये । जो गाफिल रहै तो नाश हो जायगा ।

अथ काल बचावे को विचारः—प्रथम अन्न कमती खाय । फिर रेचक, पूरक, कुंभक करे । सूर्य को चंद्रमें मिलावै, चंद्र को सूर्यमें मिलावै; इसी तरह पवन वश करे । फिर दश दरवाजा बंध करिके पवन खींच राखै पहर भर तो काल न पावै । चेतनताई राखि के जब काल आवत देखै तब श्वास को खींच राखै तो जब लों चाहै तब लों जीयें ।

शुक्लपक्ष चन्द्रमा को । कृष्णपक्ष सूर्य को । जो शुक्लपक्ष परिवाको सूर्य बहै तो मित्रकी हानि होय, उदासी होय । शुक्लपक्ष परिवाको चन्द्रमा बहै तो शुभ होय । कृष्णपक्ष परिवा को चन्द्रमा बहै तो अशुभ होय । अपनो मृत्यु आगम जानिये । सूर्य बहै तो शुभ है । कृष्णपक्ष परिवाको और शुक्लपक्ष परिवाको दोई सुर बहै तो जो कार्य करे सो सिद्ध होय । सूर्य उभै अक्षर पूरा पद । चन्द्रमा स्त्री । सूर्य पुरुष ।

शुक्लपक्ष आदि परिवाको तीन दिन चन्द्रमाके, तीन दिन सूर्य के, यह क्रमसे पूनों लहै । कृष्णपक्षके परिवासे तीन दिन सूर्य के, फिर तीन दिन चन्द्रमाके, ये क्रमसे अमावास्या लहै । इतवार, बुधवारको पृथ्वी तत्त्व बहता है । शुक्र, मंगलको अग्नि तत्त्व बहता है । बृहस्पति को वायु तत्त्व बहता है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सोमवार को जल तत्त्व बहता है। शनिचरको आकाश तत्त्व बहता है।

सूर्य दिशा होय, सूर्यवार होय, सूर्य की तिथि होय, अग्नि तत्त्व वायु तत्त्व होय ऐसे लग्न में जो कोई शाप देय सो पूरा होय।

चन्द्रमा की तिथि होय, चन्द्रवार होय, चन्द्रपक्ष होय, चन्द्रस्वर होय, जल, पृथ्वी तत्त्व होय ऐसे लग्न में आशीष देय तो पूरी होय।

रोग प्रमाणः—वायु तत्त्व में वायु होय जानिये। अग्नि तत्त्व में पित्त जानिये। जल तत्त्व में कफ जानिये। आकाश तत्त्व में मृत्यु जानिये। श्वास खींचते में प्रश्न करे तो सिद्ध होय। श्वास उतारते में प्रश्न करे तो सिद्ध न होय।

तत्त्व न मिले ताको विचारः—अष्ट कमलमें पांच तत्त्व की भाठी। सूर्य के दिन चन्द्रमा बहै तो उदासी होय। आकाश तत्त्व शीशमें, अग्नि तत्त्व ओठमें, वायु तत्त्व नाभिमें, जांघमें पृथ्वी तत्त्व। और जो कफ से गला रूँधा होय तो दोनों स्वर बंद करे तो कफ फट जाय॥

॥ इति श्री तत्त्व स्वरोदय ग्रन्थ समाप्तः ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दुर्लभ योग।

दुर्लभ योग संग्राम कठिन खांडे की धारा।
थाके शंकर शेष और जिव कौन बिचारा॥
सुर नर मुनि जन पीर रहे सब भौजल वारा।
गुरुगम गहहि बिचार सो उतरै पारा॥
सन्तोषी सम भाव रहै निर्वैर निरासा।
सो जन उतरै पार काल नहि करे विनासा॥
नहि आगे की चाह पीछे संशय नहि कोई।
रमै जु सिंगीनाद पियाना दे गत कहिये सोई॥
ना शत्रु ना मित्र संगम दूजा नहि कोई।
इस विधि रहे सदाय संत जन कहिये सोई॥
ना काहू से नेह देही का सुख नहि चाहै।
सीत ऊष्ण सिरपर सहै आदि अंत ऐसी निरवाहै॥
छांडे सकल हि स्वाद मीठा अरु खारा।
इन्द्री भोग न करही सो योगी ततसारा॥
घर बन एको रीत राचै नहिं भाई।
कनक कामिनी त्याग रहे उनमुनि लौ लाई॥
ऐसी रहनी जो रहे ताहि लेहु पहिचानी।
कहै साँच रहै काछ सो प्यारा है प्रानी॥
शब्द सरोतर कहै मिथ्या कबहूं नहि बोले।
खोजे पद निरबान बन बन काहे को डोले॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आशा तृष्णा छांड तजै सब झूठ ब्यौहारा।
रहै निरंतर लाग सो योगी ततसारा॥
काया कूं बस करे मोह तजे अरु ममछा पीवे।
ऐसा अवधू जान मरे नहीं युग युग जीवे॥
लालच लोभ निवार आतमा अस्थिर लावो।
बाजे अनहद तूर नूर का दरशन पावो॥
कूआ बावडी बाण ना कर बाड़ी बागा।
आसन मढी मसान तजे सब बाद विवादा॥
जंत्र मंत्र टाना टुमन जड़ी बूटी नहिं जाने।
अविगति नाम अराध और मिथ्या करि जाने॥
परहरु पांच पचीस दोये तजि इक पहिचाने।
सतगुरु के परताप ऐसी गति बिरला जाने॥
जाने वाकूं सुख नहि दुःख मगन व्है गगन समावे।
रहे निरंतर लाग ताते अनभै पद पावे॥
यह निज ज्ञान विचार रहे उनमुनि लौ लाई।
कहैं कबीर बिचार तहाँ कछु अंतर नाहीं॥

दोहा।

साप मरै बंबी उठै, बिन कर डमरू बाजे।
कहैं कबीर जो विष जीते, प्रान पडे (तो) सतगुरु लाजे॥
गुन गाये गुन ना हटे, कटे (न) नाम बिन रोग।
सत्तनाम जाने बिना, (क्यौं) पावै दुर्लभ योग॥
साधु सँगत गुरु ज्ञान धन, धीरज धर्म संतोष।
सत्तनाम सुमिरन भजन, येही भक्तिको मोक्ष॥

॥ इति दुर्लभ योग संपूर्ण ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ ग्रन्थ बड़ा संतोष बोध ।

धर्मदास वचन ।

धर्मदास पूछे चित लाई, तत्वभेद कहिये समुझाई ।
कौन तुरे कै जोजन दोरा, भाखो साहेब हम है भोरा ।
तत्वनको अस्थान चिन्हावो, भिन्नभिन्न करि मोहे बतावो ।
विनय करौं कीजे प्रभु दाया, धर्मदास गह दोनों पाया ।

सतगुरु वचन ।

धर्मनि सुनो तत्त्व ब्यौहारा, निस वासर का कहौं विचारा ।
लाल तुरे जोजन परवाना, मूसकी जोजन डेढ सिधाना ।
हरै तुरे जोजन दोय जाई, पीरा जोजन तीन चलाई ।
हंसा जोजन चारहि धाई, फिरके डंड तबे ले आई ।
मूल कँवल है तेज ठिकाना, षट्दल तत्त्व अकास बखाना ।
कँवल अष्टदल है तत्त्व बाई, द्वादश दलमौं पृथ्वी रहाई ।
षोडस दल जल तत्त्व बखाना, धर्मदास गहि राखु ठिकाना ।
यह विधि पांचौं आवे जाई, अपनि अपनि मजल के मांई ।
पांच तुरे रथ एक समारा, ता भीतर मन जीव पसारा ।
जीव पडा है मनके हाथा, नाच नचावैं राखैं साथा ।

साखी–अष्ट पंखुरी को कँवल हैं, तेहि भीतर जीवका बास ।
तापर मनको आसना, नष शिष तिनके पास ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुर मिलावे चंद को, चंद मिलावे सूर।
यह निज भेद विचारसों, ताहै मिले गुरु पूर॥
जाहै पवन पर चंदा बसैं, तेहि नहि ग्रासे काल।
जो यह भेद विचारही, सोई जौंहरी लाल॥
पानीमें पावक बसैं, अति घन बरषैं मेघ।
तीनों अधर अकास हैं, कौन पवन को थेघ॥
महिमा है वह नाम की, ऐन कहं आपस कीन्ह।
जो यह भेद बताई हैं, सीस अरप तेहि दीन्ह॥

धर्मदास वचन।

साहेब कहौ भेद टकसारा, जेहिते जीवन होय उबारा।
नवों तत्व के भेद बतावौ, सकल कामना मोर मिटावौ।
पांच तत्व खेलैं मैदाना, चार तत्व वे रहै ठिकाना।
छै तत्वनको भोजन केता, जाके चीन्हे आगम चेता।

सतगुरु वचन।

छठवें तत्व निरंजन नाऊं, नयनन बीच बसायेऊ गांऊं।
नाभी कँवल शब्द उठ नाला, नयनन बीच निरंजन काला।
ताहि कँवलको नाम बताई, चार बरण होय रूप दिखाई।
लखे शब्द सो जानें भेदा, राता पियरा श्याम सुपेदा।
कँवल एक बानी है चारी, बैठ निरंजन आसन मारी।

साखी—ताहे कँवल को छोडके, कीजौ शब्द विचार।
पांचों तत्त्व सम्हारहूं, उतरो भवजल पार॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चौपाई।

छसैं और इकईस हजारा, येते निशदिन दम्म सुधारा।
ताको भोजन सब मिल पावैं, जो सतगुरु यह भेद बतावैं।
बीस सहस्र पांच देव पाई, ताको लेख कहौं समुझाई।
प्रति देव पीछे चतुर हजारा, सहस्र जाप रहु छसैं धारा।
सोरह सैं में बाकी रहई, ताकर भेद हंस कोइ गहही।
जाप अठोतर जब रहि जाई, तेहि खन शब्द है सुर्त मिलाई।
साठ समै बारह चौपाई, ततखन हंसा लोक कहां जाई।

साखी—जा दिन काल गरासही, पगतैं करैं उजार।
भागी जीव चढ बैठैं, शब्द के कुलुफ उघार॥

चौपाई।

सुषमन तत्त्व करैं असवारी, तबही कालकी पहुंचे धारी।

धर्मदास वचन।

साहेब तिनका भेद बताई, जाते काल छुवैं नहि पाई।
नौ तत्वन को कहिये भेदा, एक एक के कहौ निषेदा।

सतगुरु वचन।

नौं तत्वन को भेद बताऊं, द्वारा तिनका कहि समुझाऊं।
वायु तत्वमें छूटे देहा, पवन मंडल में जाय उरेहा।
तेज तत्वमें करे पयाना, वज्र शिलामें जाय समाना।
अकास तत्व में छूटे भाई, तारागनमें जाय समाई।
धरती तत्व छूटे जेहि देहा, जल जीवमें जाय सनेहा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जल के तत्व छूटे जीव जाई, नरकी देह धरे तब आई।
सुषमन तत्व में छूटे सरीर, पसु पक्षी अस कहैं कबीर।
छै तत्वन का कहा विचारा, तीन तत्वनको भेद निनारा।
तीन तत्वन को भेद जो पावैं, निहचै हंसा लोक सिधावैं।
तीन तत्व अब प्रगट बताई, जो बूझे सो लोक हि जाई।
शब्द तत्व को जानैं भाई, सुर्त तत्व को ध्यान लगाई।
निर्त तत्व जाके घट होई, आवा गवन रहित तेहि सोई।
नौं तत्व का कहा विचारा, धर्मदास तुम करो सम्हारा।
कहेउ भेद तत्वनको बानी, छत्र अधर है नाम निसानी।
तीन भेद पुरुष के पासा, छोडे काल जीवकी आसा।
पुरुष शब्द है सीतल अंगा, तत्व निःक्षर कँवल के संगा।
आप पुरुष तेहि पिण्ड न माथा, पुरुष शब्दते देखो माथा।
काया मांहि लगी एक नाला, तहँवां हवैं निरंजन काला।
ता सिर ऊपर पांजी लागे, ता चढ हंसा जैहैं आगे।
सेत हैं पीत कँवल हैं राता, तीन तत्व जीव संग रहाता।
ताहि तत्व को भाव सुनाई, तीन रूप तिय संग रहाई।
काया खेत जाहैं हम दीन्हा, खेत कमाई आगम चीन्हा।
सप्त पंखुरी कँवल एक होई, ताकर भेद कहौं मैं सोई।
कँवल एक लोक है तीना, तीन लोक दीन्हा प्रवीना।
चौथा लोक अधर कहाँ चीन्हा, ताकर काल गम्य नहि कीन्हा।

साखी–तीनौ लोक विचार कैं, गहो शब्द टकसार।
कहैं कबीर धर्मदास सौं, उतरो भवजल पार॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धर्मदास वचन।

साहेब वचन कहो परवाना, तीन लोकका कहो ठिकाना।

सतगुरु वचन।

ब्रह्म लोक लिंग अस्थाना, ताते उत्पति होय निदाना।
विष्णु लोक नाभी दिस्तारा, शिवका लोक हृदय मंझारा।
चौथा लोक अधर अस्थाना, कहैं कबीर मैं कहौं निदाना।
ताहि लोकको ध्यान लगावैं, चलते हंस काल नहि पावैं।
सप्त पंखुरी कहौं ठिकाना, धर्मनि वचन सत्यके माना।
श्रवण दोय पंखुरी बानी, सब रस लेय सुनै सुख मानी।
तीजे नयन पंखुरी आनी, चौथे दूजा नयन बखानी।
पांचौं पंखुरी कहौं विचारा, रसना शब्द उठे अहंकारा।
छठवें पंखुरी ईन्द्री जानो, उतपति बिन्द लै डारै तानी।
साते पंखुरी हेठ बतावा, खोज कँवल अस्थिर घर पावा।
पंखुरी सात कँवल हैं एका, भीतर ताहै जीव मन टेका।
ताहै कँवल मैं तार लगाई, सोई तार कहँ चीन्हो भाई।
सो वह तार अधर लै राखा, जो कोई साधु हिरदय ताका।
ताहे तारका बहुत पसारा, खंड ब्रह्मंड पताल समारा।
ताहे तारमें डोरी लागी, विरला चीन्है हंस सुभागी।
ताकर भाव है सेतहि अंगा, नाम निःक्षर ताके संगा।

साखी-कबीर धर्मदास निःक्षर, गुप्त निःक्षर नाम।
कहैं कबीर लख पावैं, होवैं जीवको काम॥

धर्मदास वचन।

साहेब कहौ जीव किमि आवा, नरदेही कैसै के पावा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सतगुरु वचन।

पौन जीव ब्रह्मंड बनाई, ता पीछे नाभी चलि जाई।
नयन नासिका कीन्हौ साखी, मूल कँवल सुर्त गहि राखी।
चक्षु जोत तहां बरैं मसियारा, हृदय कँवल ब्रह्मंड मँझारा।
साखी-बैठत जीव जायके, द्वीपन क्षेत्र मंझार।
कहैं कबीर धर्मदाससौं, ऐसा कीन्ह विचार॥

चौपाई।

सीस सँवार बांह निरमाई, कंठ कँवल मुख हृदय बनाई।
तापर छव एक बरण सँवारा, पौन जीवसों भौ उजियारा।
कँवल संबुज औ सेत है राता, नाभी कीन्ह सकल पुनि गाता।
तेहि पीछे दोय खंभ लगाई, रचि काया पुनि जीव समाई।
सत्य पौन पुरुष के स्वांसा, सो कीन्हों जीवन संग बासा।
ताको भेद सुनो धर्मदासा, तौल लेहुं सत्ताईस मासा।
छिन छिन पल पल आवै जाई, जीवको संधि लखे नहि पाई।
प्रथम घरी ब्रह्मंड रहाई, दूजे घरी नाभि चल जाई।
साखी-तीजे घरिके बीततै, फिर तहवाँ चल जाई।
यह विधि रहनी जीवके, कहैं कबीर समुझाई॥

धर्मदास वचन।

दयावंत प्रभु और बताई, छूटे हंस कौन दिश जाई।
तौन ठांव मोहे देहौ बताई, तहां सुर्त राखौ ठहराई।

सतगुरु वचन।

साखी-उत्तर दिशा होय निकसैं, अधरहि बैठे जाय।
सो मारग बांकी है, सतगुरु देहि लखाय॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धर्मदास वचन।

साखी–चार खूंट धरति है, आठ दिशा है पौन।
सतगुरु कहौ विचारकै, हंसाके दिश कौन॥

सतगुरु वचन।

पश्चिम सूर कीन्ह रहिवासा, पूरब चंद कीन्ह प्रगासा।
दक्षिण दिशा बाट नहि पाई, उत्तर दिशा लोक दिखाई।

साखी–उत्तर घाटी ऊतरै, पांजी बैठें जाय।
तहां ते सुर्त लगावैं, पुरुष के परसे पांय॥
धरती अकाश के बाहिरै, तहां शब्द निरवान।
जहां जीव चढ बैठैं, काल मर्म नहि जान॥

चौपाई।

प्रथम हंस सुखसागर जाई, सुखसागरमें दर्शन पाई।
सुखसागर के येह संदेसा, उडगण पांती लागे कैसा।
हंसा पैठ कीन्ह अस्नाना, उगे लिलाट जो षोडस भाना।
लागी डोर शब्द की नेहा, अस पांजी है अधर विदेहा।
लागी डोर सुर्तकी तारा, चढ हंसा पांजी उजियारा।
चढ के हंस अधर सो पेखा, हंसा उलट ठाट को देखा।
भल साहेब कीन्हे मोहे दाया, छूटे सकल मोह औ माया।
पुष्प माँह जस बास समाना, हंसा धरै पुरुष इमि ध्याना।
इहविध जीव अमर घर जाई, धर्मदास सुनियो चित लाई।

धर्मदास वचन।

सतगुरु भेद सत्त मैं माना, द्वीप खंडका कहा ठिकाना।
काया खंड कहौ मोहै भाखी, जाते जीव अमर घर राखी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सतगुरु वचन।

धर्मदास बूझा भल बानी, सतवचन तोहै कहौं बखानी।
प्रथमही खंड शब्द है भाई, दूजे खंड निर्त उठ धाई।
तीसर खंड सुर्त निरमयेऊ, चौथे खंड प्रेमही ठयेऊ।
पांचे खंड शील है भाई, छठये खंड छिमा निरमाई।
सातै खंड संतोष डिढावा, आठै खंड दया समुझावा।
नवै खंड भक्ति कहँ दीन्हा, धर्मदास तुम निजके चीन्हा।
इन खंडनमें खेलै कोई, निश्चै हंसा लोकको होई।
सुनो सात द्वीपनको नाऊं, भिन्नभिन्न के कहि समुझाऊं।
वायु तत्व सुन धर्मनि बानी, पवन द्वीपमें जाइ समानी।
तत्व अकाश कहौं समुझाई, द्वीप सागर में जाइ समानी।
अग्नि तत्व का सुनिये बानी, द्वीप अगिन में जाइ समानी।
धरती तत्व अगम कछू होई, द्वीप जलनिधि जाइ समाई।
तेज तत्व सो भाष सुनाई, द्वीप शुन्य में जाइ समाई।
जलको तत्व कहौं विस्तारा, तेह सुखसागर द्वोप अपारा।
सुषमन तत्व कहौं समुझाई, द्वीप अधर में बैठे जाई।
साखी-सात द्वीप नौ खंड हैं, इनमें रहै समाय।
कहैं कबीर धर्मदास सौं, निश्चै लोक सिधाय॥

धर्मदास वचन।

साहेब भेद कहौ मैं जानी, सात वार कहांते आनी।

सतगुरु वचन।

धर्मदास बूझ भल नागर, सतसुकृत तुम ज्ञान उजागर।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कहौं भेद सुनियो चित लाई, चंद सूर दिन वार बताई।
पुरुष कौलमें सातौं वारा, ताका भेद कहौं टकसारा।
सप्त पंखुरी जब बिगसाई, सातों वार जहांते आई।
आगें वार कौलमें रहेऊ, ताहैं वार तैं सातौं कियेऊ।
सोई कौलतैं सातौं वारा, निस वासर को भयो विचारा।

साखी–मंजन कीन्हो कौलको, छोलन पर गया पास।
ताते चंद सूर भये, पृथ्वी को परगास॥

चौपाई।

पहिले छोलन जलना रहिया, ताते सूर तेज अनुसरिया।
सुनियो चंद केर सितलाई, धर्मदास मैं देहु बताई।
सींचौ अमी छोलन पुनि जबही, सीतल चंदा उपजो तबही।
छोलन चुनी जो झरझर परही, नक्षत्र चंद्रमा संगत करही।
यह सब रचना कूर्म हि दीन्हा, पीछे ध्यान अधरमें कीन्हा।
रहै जाय कूर्म के पेटा, धर्मराय ता घर नहिं देटा।
पुरुष दीन्ह उतपति धर्मराई, धाये कैलरा कूर्म सो जाई।

साखी–छीने माथा नखसों, हेरिन सब विस्तार।
महाशून्य ले गयेऊ, धर्मराय बटपार॥
कूर्म उदरतें नीकसो, कोइ न कीन्ह विचार।
मूल बीज जब पावस, भये काल बरियार॥

चौपाई।

निकसी खान वेद रस बानी, चंद सूर औ उडगण जानी।
सर्व विस्तार निकस जब आई, धर्म जलनिधि राख छिपाई।
आद्या पुरुष दीन्ह पठवाई, आद भवानी अमृत लाई।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अष्टंगी देखा धर्मराई, तासों रति संयोग बनाई।
आद्याके विधि शिव मुरारी, मथ जलनिधि हेरिन झारी।
अष्टंगी ते भौ विस्तारा, सब रचना यह कीन्ह हमारा।
विनती कूर्म पुरुष सों लाई, तुम सुत सीस हमार छिनाई।
साखी–वचन तुम्हारे जानेऊ, राख शब्द की कान।
नीर जलनिधि सोषके, मेटत सब उतपान॥

चौपाई।

छूछ उदर अब भयो हमारा, अहो पुरुष अब देहो अहारा।
बानी पुरुष उधर ते कीन्हा, चाहौ कूर्म मांग तुम लीन्हा।
साखी–ना कछू भोजन चाहौं, ना कछू करौं अहार।
चंद सूर जब पाइ हौं, तब लेहौं सिर भार॥
चंद सूर चल आइ हैं, तब मैं करौं अहार।
चंद सूर पहुंचे नहीं, तौंलौं लीलो संसार॥

चौपाई।

पुरुष वचन तब कहैं विचारी, भोजन सूर पहर लेवो चारी।
ससि भोजनका कहौं विशेषा, चारि घरीको राख विशेषा।
अमृत छीन छीन तुम लेहूं, पीछै संपूरण कर देहूं।
चंद तेज धर्मनि इमि हानी, सूर तेज जिमि बहुत बखानी।
कूर्म पुरुष वचनहि देखा, घरी पहर को बांधेउ लेखा।
छिन औ पलक डंड प्रवाना, घरी पहर का कहौं ठिकाना।
षट् बफका पल एक होई, षट् पलको छिन जानहु सोई।
दश छिनका एक डंड बखाना, दोय डंड एक घरी प्रवाना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार घरी एक पहर विवेखा, चार पहरका दिन एक लेखा।
सात वार दूनैत्तर आना, येहि विध पाख भयो प्रवाना।
दोय पाख एक मास बखानी, तीन चौकडी वर्षहि जानी।
आगे देखो ताको लेखा, धर्मदास अब कहौं विशेखा।
निस वासर पुनि होय जबही, कूर्म अहार सूर ले तबही।
निस चंदा पुनि कीन्ह प्रगासा, वासर सूर कीन्ह रहिवासा।
अमी चंदके पेट रहाई, ताका लेख कहौं समुझाई।
कूर्म अहार चंद इमि लीन्हा, घरी घरी घटती तब कीन्हा।
पाख दिना लग भौ परगासा, पूरण चंदा भये निवासा।
व्रत अखंडित पूनौ सोई, यह चौका कूर्म कर होई।
ताते व्रत बंस कहां दीन्हा, अंस बचाय जीव कर लीन्हा।
यह सुन कूर्म हर्ष मन आई, पुरुष वचन जब कहैं समुझाई।

धर्मदास वचन।

साहेब कहेउ भेद हम पेखा, अब भाखौ पवन कर लेखा।
पवन भेद मोहि कहौ समुझाई, वचन तुम्हार हिरदे लौलाई।
कहवां ते यह पवन उठावा, दिसा भेद मोहे कहि समुझावा।
ताहि पवन कै नाम बुझाई, तत्त भेद मोहे देहो बताई।
सुर्त सम्हार चरन चित देई, साहेब मोहे अपन कर लेई।

सतगुरु बचन।

धर्मदास सुन पवन न पानी, कूर्मके मुख पवन उतपानी।
चारों और पवन उठ आवा, ताकर भेद कोई नहि पावा।
कूर्म माथ मैं कहौं बखानी, सज्जन संत कोई कोई जानी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आठ माथ पृथ्वी सों भिन्ना, आठ दिसा भये ताकर चीन्हा।
माथा तीन छीन लै गयेऊ, धर्मराय तेहि ग्रासन कियेऊ।
ताका चौदह भुवन बनाई, सोई रूप नर केर सुभाई।
अधर पवन सों जीव उतपानी, चलेउ रंध्र सो अधर समानी।
ताहे पवनका जानैं नांऊ, कर्मज काट करै मुक्ताऊ।
ताहे पवन का पारस नामा, होय संयोग उठै जब कामा।
बाहेर होयके देह जगाई, उठै बिन्द तब चल मनसाई।
रितु बसंत त्रिय जा दिन होई, स्वांति पवन परै पूरन सोई।
धर्मदास तोहे कहौं विचारा, शून्य परै सो भेद निनारा।
स्वांती पवन छुवे नहिं पावै, बिन्द अकेला जो उठ धावै।
ताते शून्य होय पुन जोई, कहौं भेद चित राख समोई।
तौंन तत्व बिंदो गहो जोई, ताते बांझ होय पुनि सोई।
उतपन पवन कहौं मैं सोई, स्वांती पवन लै संपुट होई।
तौन नाम सुन हंसा पावैं, कहैं कबीर सो लोक सिधावैं।
चलत बिन्द तीनौं मुख धाई, अरध नाम अधरहै चढ जाई।
अढाई अक्षर मों संसारा, अरध नाम सों लोक पसारा।
तौन नाम हैं अधर निवासा, कायातैं बाहेर परकासा।

साखी—धरन अकाश के बाहिरैं, जोजन आठ प्रवान।
तहां छत्र तनि राखेऊ, हंस करैं विश्राम॥
साठ कोसके ऊपरैं, अकह नाम निनार।
तहवां ध्यान लगावही, हंसा उतरैं पार॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चौपाई।

सतगुरु मिले तो भेद बतावैं, नातौं योनी संकट आवैं।
साखी–अंकुर नाम वह शब्द है, कीन्हा सकल पसार।
कहैं कबीर धर्मदास सौं, सुनौ बचन टकसार॥

चौपाई।

राई भर है वस्तु हमारी, अर्ध राई अस्थूल सुधारी।
लहर लहर वह भीतर होई, पुरुष मूल निज जानहु सोई।
उन कहां सौंप दीन्ह सिर भारा, वै जीवनका करैं उबारा।
भाखौं शब्द पृथ्वी भहराई, फूट अकाश शब्द होय जाई।
विष भाखत जो छूट शरीर, आवैं लोक अस कहैं कबीर।
तत्व प्रवान अधर है धामा, तत्व अंस औ अज्र अनामा।
तौंन नाम लै हंस उडाई, छूटत पिंड काल नहि पाई।
साखी–पवन भेद मैं भाखेऊ, कह्यौ भेद टकसार।
पचासी पवन हैं बाहेरै, इनमों काल पसार॥
पचासी पवन के बाहेरै, अज्र शब्द निजसार।
धर्मदास प्रतीत कै, सुमरहु नाम हमार॥

चौपाई।

सुमर नाम औ हंस उबारौ, नाम पान औ सुर्त सम्हारौ।
साखी–दीजो अपने बंसको, शब्द करैं सम्हार।
गुप्त नाम गहि राखही, हंस उतारै पार॥

चौपाई।

कहौं अधर तुम सुनौ ठिकाना, जाहे अधर मों जीव समाना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

साखी-एक अधर होय आवही, एक अधर होय जाय।
एक अधर कर आसन, अधरहि मांहि समाय॥
अधर करै घट आसन, पिंड झरोखे नीर।
मैं अदली कदली बसौं, दया क्षमा सरीर॥

धर्मदास वचन।

कहेउ तत्व मेरे मन माना, अब प्रभु कहिये सुर्त ठिकाना।
कहां सुर्त के उतपन भयेऊ, कहां निर्त दूसर निरमयऊ।
कैसे के घट आन समानी, हो समर्थ मोहि कहो बखानी।
सुर्त निर्त संगम किमि भयेऊ, पसु पक्षी कैसे निरमयऊ।

सतगुरु वचन।

मूल नाभते शब्द उचारा, फूट नाल तब भये दोऊ धारा।
स्वाती पवन अधर सो आई, सुर्त निर्त संग लागा धाई।
ताका भेद न कोई पाई, पसु पक्षी नल रहै समाई।
पसु पक्षी मों रत हो गयेऊ, सुर्त बोध वह शब्द न गहेऊ।
जो यह शब्द का करै पसारा, सुर्त निर्त लै करैं सम्हारा।
गहे शब्द तब लोक सिधाई, बिना शब्द पसु पक्षी भाई।
बिना शब्द जिमि घट अंधियारा, छिन छिन ता कहं काल अहारा।
शब्द सुर्त निर्त एक ठौरा, तब मुख वचन होय कछु थोरा।
अगम तत्व तुम मथौ सरीर, निर्त नाम भये सत्य कबीर।
निर्त धरैं शब्द की आसा, सुर्त नाम तुमहो धर्मदासा।
सुर्त निर्त सो बांधे नेहा, पावै नाम हंस की देहा।
कथे ज्ञान भाखेउ टकसारा, धर्मदास तुम करो विचारा।
हम तुम कीन्ह सकल पसारा, लोग न मानत मूढ गंवारा।
मथुरा बैठके शब्द सुनाई, धर्मदास गहे सतगुरु पांई।

॥ इति ग्रंथ बडा संतोषबोध सम्पूर्ण॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ सत्यनाम ॥

—सद्गुरु कबीर गोरख संवाद—

ग्रंथ गर्भावलि ।

कबीर वचन-चौपाई ।

कहैं कबीर सुनो गोरख भाई, इन्द्री बांध मुक्ति किन पाई ।
सोइ साधन करो गोरख ऐसा, जासु मिटे गर्भ की त्रासा ।

गोरख वचन ।

गोरख कहै सुनो प्रभु मोरे, मैं लागत हुँ चरण तुहारे ।
गर्भ संदेश दया कर कहिजे, आपन जान भेद मोहि दीजे ।

कबीर वचन ।

गर्भ संदेश कहूं अरथाई, लगन तत्व सब जुगत बताई ।
वार तिथि सबहि समुझाऊं, येहि भेद कोई विरले पाऊं ।
बूझहु भेद गर्भ संदेशा, वार तिथिका कहुं उपदेशा ।
जब जामें नारी गर्भ में नीरू, सोई तत्व खोजो कहैं कबीरु ।
वार तिथि लगन तब जाने, सो पूरा ज्ञानी गर्भ बखाने ।
सोई पूछै गर्भका लेखा, पूरा गुरु जो कहैं विवेखा ।
विना जुगत सबहि बहुरावा, फिर फिर गर्भवासमें आवा ।
लगन तत्वकी जुगत जो होई, गर्भ संदेश कहुं पुनि सोई ।
कहैं कबीर सुन गोरख सिद्धा, गर्भवास ऐसे कर बंधा ।

गोरख वचन ।

पूछै गोरख सुनो गुरु ज्ञानी, गर्भ संदेश मोहि कहो बखानी ।
कहो विवेक बतावो मूला, कैसे बंधे गर्भ अस्थूला ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पांच तत्व कहां ते आई, कैसे घटमें आन समाई ।
तीनों गुण का कहौं विचारा, कैसे घटमें कीन्ह संचारा ।
बहुत गुण काहेते होई, सकल भेद कहौ समुझाई ।
कौन गुण नर होवे शूरा, कौन गुण ज्ञानी होवे पूरा ।
कौन गुण धन होय अपारा, कौन गुण नहि टिके अधारा ।
कौन गुण होवे छत्र सिंहासन, कौन गुण होवे भभुत के आसन ।
कौन गुण होय भोग अपारा, कौन गुण होय बिंद संचारा ।
कौन गुण होय नर धूतारा, कौन गुण होय चोर ठगारा ।
जंजाली होय कौनसु भाई, कौन गुण सब मांहि समाई ।
रुड होय कौन गुण जानी, बहिरो होय सो कहो बखानी ।
युग जोड उपजे नर कैसा, कैसे पहिरे नारी को भेषा ।
कैसे नमावे सबनको माथा, कैसे जीव होय अनाथा ।
कोटि धनके कहो व्यवहारा, दालिद्री होय कौन बिचारा ।
कौन पालखी बैठनहारा, कौन होय उठावनहारा ।
सकल भेद समुझावो मोही, गर्भ संदेश पूछुं मैं तोही ।

कबीर वचन ।

पांच तत्व तीन गुन पेखो, सात वार जुगतसे देखो ।
पंदर तिथि और वार मिलावो, गर्भ संदेश जुक्तसे पावो ।
चोट निसाये गुरु लखावे, ज्ञानी सोई गर्भ समुझावे ।
रवि सनिश्चर मंगलवारा, वार तीन लेहो सुरकी धारा ।
सोम शुक्र और बुद्ध बिचारा, वार तीनको चंद्र सिरदारा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गुरुवारको भेद निन्यारा, दोउ वीर दोउ असवारा ।
जैसी तिथि तैसी साहेदी देही, तैसो फल प्राप्ति होही ।

कृष्णपक्ष पुरुष लगन ।

प्रथम पुनम कही बिचारा, वार रवि जो आवे वारा ।
पृथ्वीतत्व साहेदी देही, आकास सुर लगन जो होही ।
छत्रधारी उपजे निरबाना, चहु चकमे चले जो आना ।
और तत्त्व लगन जाय निरासा, जमे नहि नीर गर्भमें आसा ।
परिवा वार चंद्र शुद्ध धावे, चंद्रलगन तत्वबेरियां आवे ।
कन्या देही धरे शरीरा, रूपवंत गुन बहुत अपारा ।
तिथि दूजो जो रहे समाई, अफल जाय जमे नहि भाई ।
बीज मंगलका येहि बिचारा, सूर चले जो जलकी धारा ।
तेज आय जो साहेदी देही, करे ज्ञान वाकुं कोना गहही ।
नातो प्रत जमे नहि नीरु, अफल जाय बिंद कहे कबीरु ।
बुद्ध तीजका एही बिचारा, चंद्र चले पृथ्वी कीं धारा ।
कन्या होय गुन बहुत प्रकासा, कुटुंब करे सब ताकी आशा ।
और तत्व जमे नहि भाई, कोट जतन करे जो कोई ।
चौथ गुरुका एही बिचारा, दोई वीर जो होय असवारा ।
नर उपजे जो सूरजकी धारा, कन्या होय चंद्रकी लारा ।
जैसो लगन तैसा फल होई, ना देखे कोई भेद बिलोई ।
अपने अपने तुरी असवारा, जैसा जावन जमे तेहि बारा ।
पांचम शुक्रका एही विचारा, सूर चले जो जलतत्वकी धारा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कन्या होय कोण तत्व बूझे, पकर शस्त्र रणमांही झूझे।
जमे नीर तो यह फल होई, नहि तो कंद्रप जाय बिगोई।
छठ शनिश्चरका एहि बिचारा, सूर चले जलतत्वकी धारा।
नीच होय अति धनपत कही, वो तो हाथ उठावे नही।
नीर जमे तो यह गुन होई, ना तौ बिंद जमे नहि कोई।
सातम रविका करो बिचारा, सूर चले जलतत्व अपारा।
पुरुष होय तत्वहीन तन होई, मरद होय नपुंसक देही।
जो जल जमे तो होयही ऐसा, नातो कंद्रप जमे नहि कैसा।
आठम तिथि चंद्रको वारा, जमे कंद्रप आकाशकी धारा।
भितर छीजे बाहेर नहि आवे, गर्भ गले कोई चैन नहि पावे।
तत्व आकाशका एही बिचारा, छीजे कंद्रप गर्भ मंझारा।
नवमी मंगलका एही बिचारा, चले सूरज तेजकी धारा।
नर उपजे जो बहुत बिख्याता, अटके जिभ्या करत है बाता।
धन धान्य होय घर मांही, सबही दुनियां करहि बडाई।
जो उपजे तो ऐसा होई, ना तो कंद्रप जाय बिगोई।
बुध दसमीका करो बिचारा, चंद्र चले वायुतत्वकी धारा।
कन्या होय नहि करे संतोषा, काम संपूर्ण होय नहि अंगा।
जो जमे तो यह फल होई, नातो नीर जमे नहि कोई।
गुरुवार तिथि एकादशी होई, ऐसी जुगत पावे नहि कोई।
सुर चले पृथ्वीकी धारा, धनवंत नर होय अपारा।
बहुत द्रव्यका लहे सुख भारी, ऐसा देखो तत्व बिचारी।
जो जमे तो येही तत्व जामे, नहि तो निष्फल जाय अकामे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

द्वादश तिथि और भृगु वारा, चंद्र चले जो जलकी धारा ।
कन्या होय बहुत गुनवंती, होवे रूप धीरज हैरंती ।
जमे नीर तो येही फल होई, नातो नीर जमे नहि कोई ।
तेरश शनिश्चरका एही बिचारा, चंद्र सूर बहे एके लारा ।
जलतत्व उन बेरियां आवे, जामे पृथ्वी आन समावे ।
पुरुष होय धन बहुत अपारा, राजा रंक चले तेहि लारा ।
जमे नीर तो होई है ऐसा, ना तो कंद्रप जमे न कैसा ।
चतुर्दशी रवि दिन होई, सुर चले पृथ्वीकी देई ।
चोर ठगके फांसी डारे, पाडे बाट मनुष्यही मारे ।
कुबुधि जाहीमें होय अपारा, बेदक लगनका एही बिचारा ।
सोम अमास बेदक होई, ता दिन संग करो मत कोई ।
जो कबु संग करे जन कोई, के अंधा के निरधन होई ।
सूर चले जलमधकी धारा, चोर चुगल होय बटपारा ।
के घर फोरे लोकनको राती, के निरधन के ठगको संघाती ।
शुकल पक्ष शक्ति की देहा, ताहि लगनमें करो उरेहा ।
धूर मंगल से परिवा पेखो, चले सूर पृथ्वीसे देखो ।
पुरुष होय बहुत गुन अपारा, ❀ ❀ ❀
बहु ज्ञानी धनवंता होई, इस विध जुगत साधो जो कोई ।
ना तो बुंद जमे नहि नीरू, अफल जाय अस कहे कबीरू ।
बुद्ध बीज जमे जो भाई, चंद्र चले सूरज की देई ।
पुरुष होय जो जोगको साधे, त्रिया को पुरुष नहि आराधे ।
बिना तत्व जमे नहि नीरू, जो कोइ ज्ञानी देख शरीरू ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गुरू नीजका एही विशेखा, चंद्र चले पृथ्वी संग देखा ।
सो कन्या पतिवरता होई, काष्ट चढे स्वामी संग सोई ।
जामन जमे तो यह गुन होई, ना तो बीज जमे नहि कोई ।
चौथ शुक्र बेदक लगन सोई, जमे बीज दोई सुर बहई ।
पृथ्वी सूर चले जो धारा, हिजरा होय बहु रूप अपारा ।
पहेरे स्वांग त्रियाका सोई, लगन तत्त गहे भेद बिलोई ।
पांचम शनिश्चर वेदक लगन होई, लखे भेद बिरला जो कोई ।
चंद सूर बहे घर दोई, ले बीजक तब आन समोई ।
तेज तत्व पृथ्वी घर आवे, पुरुष होय धनको सुख ना पावे ।
सिल अंग होय हीन कहावे, जल जमे तो यह फल पावे ।
रवि छठ दोइ होय पूरा, जल पृथ्वी संग उगे सूरा ।
धनवंत नर होय नर सोई, दान पुन्य करे ना कोई ।
महा सूम कृपण कहावे, धर्म पुन्य परोस ना सोहावे ।
जल जमे तो यह गुन होई, ना तो कंद्रप जमे न कोई ।
सातम सोम एक संग होई, एही भेद कछु कहा न जाई ।
पवन तत्व चंद्र जो धावे, तामें जल जो आन समावे ।
वा कन्याका करो बखाना, बरनत लक्षण नहि आवे बरना ।
जावन जमे तो यह फल जाना, कला अनन्त गुन बहुत निधाना ।
आठम मंगल करो बिचारा, चले सूर वायु की धारा ।
अष्ट पंगलो उपजे नर सोई, इनकी कुबुधि को वरनि सुनाई ।
या जावनका एही बिचारा, पूरा ज्ञानी करे निरबारा ।
बुध नवमी का एही बिचारा, चंद्र चले जो जल की धारा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पद्मिनी रूप कन्या अवतारा, गुणवंती शील सुख धारा ।
बुन्द जमे तो यह फल पावे, ना तो कंद्रप एळे जावे ।
गुरु दशमी का एही बिचारा, दोउ लगन प्रचले जो धारा ।
बायु तत्व साहेदी देही, बांझ होय पुरुषकी देही ।
जमे बीज तो एही फल पावे, ना तो मूरख बीज गमावे ।
भृगु अगियारश कहिए भाई, चले तत्व आकाशकुं जाई ।
चंद्र चले कन्या तन होई, पुरुष सुख देखे नहि कोई ।
बालरांड कहावे ऐसा, तत्व आकाशका एही तमाशा ।
शिर छत्र वाके नहि ठहरे, सोळे शणगार कबु नहि पहिरे ।
शनिश्चर बारशका एही बिचारा, चले सूर जो जलकी धारा ।
निरधन पुरुष होय जो भारी, अन्नके कारण फिरे भिखारी ।
रवि तेरस बेदक लगन होई, सूर चले जो जलकी देही ।
चंद्र सुभाव देही सो होई, मेदल रूप अवतरे सोई ।
जमे बीज तो यह फल होई, ना तो बीज जमे नहि कोई ।
सोम चौदश का कहु बिचारा, समझे लगन तत्व टकसारा ।
चंद्र चले वायुकी धारा, त्रिया उपजे बांझ अवतारा ।
कंद्रप जमे तो यह फल होई, ना तो बीज जमे नहि कोई ।
रातदिवस की साधे रीत दोई, बेदक लगन दोउके होई ।
रूंढ मुंढ उपजे नर सोई, बुध पुनमका बुधवंता होई ।
दोउ बुन्दका जोडा सोई, दोऊ लगन तत्व है दोई ।
द्विज गुरुका बहुत विधाता, आठम थावर नीच मलेच्छा ।
गर्भ संदेश संपूरण होई, अब हम बरन सुनावे सोई ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

गोरख बचन

गोरख कहे सुनो प्रभु मोरे, मैं लागत हूं चरन तुहारे ।
अगम बात कैसे कर जानी, किन यह काया कीन बंधानी ।
प्रथम कौन गर्भ में आवा, कैसे कर ए पिंड बंधावा ।
कैसे रचे गर्भ अस्थूला, कैसे बंध्यो गर्भको मूला ।
मोसे भेद कहो अरथाई, मोरा मन तबही पतियाई ।

कबीर बचन ।

कहे कबीर सुन गोरख सिद्धा, गर्भवास एसे कर बंध्या ।
त्रिकुटी तीर बिंद अस्थाना, मेरु डंड होय करे पियाना ।
लगन तत्व है उनके पासा, वेही गर्भमें करे निवासा ।
शिव शक्तिके व्यापे कामा, ब्रेहे बान मांडे संग्रामा ।
शिवके बिंद शक्तिको नादा, दोऊ मिलके काया बंदा ।
रतिको काम मासाकी चोरी, येही बिध मिल माया जोरी ।
सम दरिआव जीवका बासा, श्वासा तत्व लई जाय उन पासा ।
पवन रेवति अधरते आवे, मन जीव तब आन समावे ।
जीव मन श्वासा के संगा, श्वासा चले तत्वके अंगा ।
बंकनालकी रहा होय आवे, येहि बिध गर्भमें आन समावे ।
कमल दोय नारीके पासा, नाभकमल होय जगमें बासा ।
शिव शक्ति तहां लहे निवासा, तले जठरा ऊपर जीव बासा ।
सतगुरु मिले छुडावे त्रासा, नहिं तो पडे कालकी फांसा ।

गोरख बचन ।

सुनिये स्वामी गर्भ बंधाना, कैसे करि है हंस पियाना ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कैसे मिटे जठरकी त्रासा, कौन नाम कहिये परकाशा ।
जब जम रोके सब अस्थाना, कौन रहा होय देहि पियाना ।
अमर लोक कहां है बासा, कहां करे पुरुष रहिबासा ।
सकल भेद मोहि कहो बताई, निश्चय बंदहु तुहारे पाई ।

कबीर बचन ।

सुन गोरख एही भेद अपारा, भली बातका कीन बिचारा ।
सतगुरुका है बाहिर बासा, समझ सरूप महापरकाशा ।
ऐसा भेद पावे जो कोई, जमपुर कबहु न जाय बिगोई ।
तब जम रोके दसु दुवारा, त्रिकुटी तज हंसा होय न्यारा ।
अभे दुवार जब गुरु लखावे, वेही पथ हंसा लोक सिधावे ।
पवन रेवती पर होय असवारा, पहुंचे हंसा लोक दुबारा ।

गोरख बचन ।

धन सतगुरु तुम्हरी बलिहारी, हमरा जीव तुम लीन्ह उबारी ।
गुरु मछंदर गुरु हम कीना, जिन ने जोग ध्यान मोहि दीना ।
पवन साध काया में राखा, मुक्तपंथ दिखायो आखा ।
तीन तत्व मांहीं सब कोई जाने, जति सिद्ध के नाथ बखाने ।
अब सतगुरु मोरा करो उबारा, मैं तो सरणा लेहूं तुम्हारा ।

कबीर बचन ।

अब हम तुमकुं भेद बताई, देश मोरधज में जनमो आई ।
जेसलमेर मारु मंझारा, भाटीके घर लेहो अवतारा ।
ज्ञानी होइ है नाम तुम्हारा, खोजी होइ है गुरु तुम्हारा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फिर आवो गुजरात ठिकाना, कानु मंडल भूम बंधाना।
जहां होइ है अस्थान तुम्हारा, बहु ज्ञानका तुम करो बिचारा।
इन देहीसुं समझावुं तोही, तुम्हरो पंथ बिचल सब जाई।
तुम्हरो भेख चले संसारा, तुम्हरे जीवका करो उधारा।
तुम तो बिंद साधना कीना, भग देख तुम बहुत डराना।
जाते गर्भवासमें आई, तुम्हरो पंथ गंम नहि पाई।
गोरखके मनमें अैसी आई, देह धरो सिंधमें जाई।
क्षत्रिघर तुम हो अवतारा, जुक्तही जुक्तसु करो उधारा।

गोरख बचन।

साखी—कहे गोरख सतगुरु सुनो, मैं लेहूं अवतार।
फिर हमकुं कैसे मिलो, सतगुरु कहो बिचार॥

कबीर बचन।

कहे कबीर खोजत मिले, तुमही हसो अपार।
खोजी मन संशय परे, फिर तुमकुं बूझे बिचार॥
जब तुम हमकुं खोजहो, फिर देहो दीदार।
खोजीका संसा मिटे, सहजे होय उधार॥
जेसलमेरं वाही तरे, भाटीकुल रजपूत।
गुजरदेश पावन कियो, ज्ञानी ज्ञान अवधूत॥
बटक बीजके मांडमें, देख भया मन थीर।
जन ज्ञानी संशय मिट्या, सतगुरु मिले कबीर॥

इतिश्री गर्भावलि ग्रंथ गोरख कबीर संवाद संपूर्ण।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com